।। ओ३म् ।।

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/-
आजीवन : 1100/-
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
पोस्टल रजि. सं.
U.P./MBD-64/2013-16
दयानन्दाब्द १९१,
सृष्टि सं.-१९६०८५३११५

वर्ष-14 / अंक- 9 / श्रावण शु० २ से भाद्रपद कृ. २ सं. २०७२ वि. 16-31 अगस्त 2015 / अमरोहा (उ.प्र.) / पृ.- 12 / मूल्य- 5/-

एपीजे कलाम

अपूर्णनीय क्षति

पढ़िए विशेष सम्पादकीय

स्वामी सुमेधानन्द नहीं रहे

दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की संचालन समिति के पूर्व अध्यक्ष, हिमाचल प्रदेश स्थित दयानन्द मठ, चम्बा के संस्थापक, आर्य समाज तथा लोककल्याण के लिए समर्पित वैदिक विद्वान एवं कर्मशील संन्यासी स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती (76) का 5 अगस्त को रात्रि 9.45 बजे निधन हो गया। वे आजीवन महर्षि दयानन्द के मिशन के प्रति समर्पित रहे। उन्होंने दयानन्द मठ,चम्बा में विशाल गुरुकुल, चिकित्सालय, वैदिक अनुसंधान केन्द्र आदि की स्थापना करके वहां अनेक प्रकार की गतिविधियों का सफल संचालन किया। उनके निधन से आर्य जगत ने एक प्रखर व्यक्तित्व खो दिया है। स्वामी जी के आकस्मिक निधन के समाचार से सम्पूर्ण आर्य जगत में शोक की लहर दौड़ गयी है। हार्दिक श्रद्धांजलि।

टंकारा में बोधोत्सव का आयोजन

टंकारा। प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्मस्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन 6 से 8 मार्च 2016 तक किया जाएगा। श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट के मंत्री रामनाथ सहगल ने आने वाले सभी अतिथियों से आग्रह किया है कि वे इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्यजनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनाएं। उनके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होंगी।

१० से भोपाल में होगा दसवां विश्व हिन्दी सम्मेलन

भोपाल। दसवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन, भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्वारा मध्य प्रदेश सरकार के सहयोग से 10 से 12 सितंबर 2015 तक मध्य प्रदेश के भोपाल शहर में आयोजित किया जा रहा है। दसवें विश्व हिंदी सम्मेलन को भारत में आयोजित करने का निर्णय सितंबर, 2012 में दक्षिण अफीका के जोहांसबर्ग शहर में आयोजित नौवें विश्व हिंदी सम्मेलन में लिया गया था। विश्व हिंदी सम्मेलनों की परंपरा 1975 में नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन से शुरू हुई। तब से इन सम्मेलनों ने एक वैश्विक स्वरूप और गति प्राप्त कर ली है। क्रमानुसार, नौ विश्व हिंदी सम्मेलन विश्व के विभिन्न देशों में आयोजित किए जा चुके हैं जिनमें मॉरीशस, स्पेन, ट्रिनिडाड एण्ड टोबेगो, यू.के, सूरीनाम, अमरीका और दक्षिण अफीका प्रमुख हैं।

दसवें विश्व हिंदी सम्मेलन में समकालीन मुद्दों और विषयों पर विचार-विमर्श किया जाएगा। सम्मेलन का मुख्य विषय 'हिंदी जगत : विस्तार एवं संभावनाएँ' हैं।

सम्मेलन के आयोजन हेतु तीन समितियाँ गठित की गई हैं। परामर्श एवं कार्यक्रम समितियों की अध्यक्ष विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज हैं जबकि प्रबंधन समिति के अध्यक्ष विदेश राज्य मंत्री जनरल वी.के. सिंह हैं। सम्मेलन का आयोजन स्थल लाल परेड मैदान, भोपाल है। मध्य प्रदेश राज्य सरकार सम्मेलन की स्थानीय आयोजक है तथा मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री, शिवराज सिंह चौहान मुख्य संरक्षक हैं। सम्मेलन के लिए माखन लाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल भागीदार संस्था है। सम्मेलन स्थल पर विशेष प्रदर्शनियां लगाई जाएंगी। प्रदर्शनी स्थल पर, हिंदी की पुस्तकों के लोकार्पण के लिए अलग से एक स्थान निर्धारित किया जाएगा जहाँ पुस्तकों एवं पत्रिकाओं का लोकार्पण समानांतर रूप से चलता रहेगा।

सम्मेलन की रिपोर्ट भी प्रकाशित की जाएगी जिसका प्रकाशन श्माखन लाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा, जबकि सम्मेलन- रिपोर्ट का प्रकाशन महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा किया जाएगा। सम्मेलन संबंधी सूचनाएं वेबसाइट www.vishwahindisammelan.gov.in पर देखी जा सकती हैं।

गुरुकुल कुरूक्षेत्र के आचार्य देवव्रत

बने हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल

कुरूक्षेत्र। गुरुकुल कुरूक्षेत्र के प्राचार्य आचार्य डॉ. देवव्रत हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल नियुक्त किये गये हैं। वेद प्रचार के लिए समर्पित डॉ. देवव्रत ने इसके लिए राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी व प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार व्यक्त किया।

उल्लेखनीय है कि आचार्य जी ने गुरुकुल को आधुनिक श्रेय देकर शिक्षा को एक नया आयाम दिया है। उन्होंने गुरुकुलीय शिक्षा के मायने बदल दिये। उन्हें राज्यपाल नियुक्त किये जाने की सूचना मिलते ही देश भर से बधाईयों का तांता लग गया।

मूल रूप से हरियाणा के पानीपत जिले के संवालखा क्षेत्र के पावटी गांव के रहने वाले डॉ. देवव्रत ने बताया कि शुक्रवार को राष्ट्रपति भवन से फोन आया था। उन्होंने कहा कि पहले तो इस पर विश्वास नहीं हुआ। आचार्य जी ने कहा है कि केन्द्र सरकार ने उन्हें जो जिम्मेदारी दी है उसे वह पूरी निष्ठा व ईमानदारी से निभाएंगे।

कर्णवेधन के अवसर पर हुए कार्यक्रम

सुमन कुमार वैदिक
मंदसौर (म0प्र0)।

13 से 14 जुलाई तक शामगढ़ (मंदसौर) में वर्तमान परिस्थितियों में विशुद्ध वैदिक विद्वानों द्वारा चतुर्वेद शतकम् यज्ञ, पौत्री का कर्णवेध, पुत्र नितिन का प्रियंका के साथ विवाह संस्कार, तथा पं0 सुखदेव जी का जन्मदिन मनाया गया। आर्य जगत के अनेक संन्यासी, विद्वानों सहित योग प्रशिक्षिका बहन सरोज शर्मा एवं कृष्णपाल उपस्थित रहे।

यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य विष्णुमित्र ने यजुर्वेद के मंत्र कर्णवेध के साथ पढ़े तथा विद्वान आचार्य ने विवाह संस्कार के मंत्रों की व्याख्या के साथ कहा कि गुणहीन असदृश दुष्ट कन्या पुरुष के साथ विवाह नहीं करना चाहिए। प्रजा की उन्नति करना हर दम्पत्ति का कर्तव्य है। स्वामी ब्रह्मानन्द ने गृहस्थ का महत्व बताया। शादी का अर्थ खुशी होता है, जिसमें पाणिग्रहण संस्कार होता है। डॉ0 सोमदेव शास्त्री ने अपने आशीर्वचन में कहा कि पति-पत्नी सुधरे हुए का विवाह करना चाहिए, बिगड़े हुए का नहीं। फूलों की तरह मुस्कुराते रहना। हवा का झोंका आए तो झुक जाना। जो झुकता नहीं, टूट जाता है। अंजलि आर्या एवं सतपाल शर्मा ने भजनों की प्रस्तुति दी।

महात्मा चैतन्य मुनि संरक्षक मनोनीत

अनुराग शर्मा अजल
करतारपुर (पंजाब)

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, करतारपुर (पंजाब) को और अधिक गति देने के लिए गत दिनों श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में गुरुकुल के विकास के लिए ऐसे किसी अनुभवी वैदिक सिद्धांतनिष्ठ विद्वान को संरक्षक बनाने पर चर्चा हुई, जिसके दिशा निर्देश में गुरुकुल की चतुर्दिक उन्नति हो सके। इसी दृष्टिकोण को लेकर समिति ने सर्वसम्मति से आर्यजगत के सुप्रसिद्ध लेखक, मनीषी एवं प्रबुद्ध वैदिक प्रवक्ता महात्मा चैतन्य मुनि को गुरुकुल का संरक्षक नियुक्त किया है। गुरुकुल के वर्तमान प्रधान ध्रुव मित्तल इस गुरुकुल को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा दिलाने के लिए तन-मन व धन से परिश्रम कर रहे हैं।

माता-पिता की सेवा करने वाला दुखी दरिद्र नहीं होता : स्वामी ब्रह्मानन्द

सुमन कुमार वैदिक
भिवानी (हरियाणा)।

5 जुलाई को पुष्पेन्द्र बोहरा के निवास पर आयोजित कार्यक्रम में उनकी पुत्रियों को यज्ञोपवीत स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, महेन्द्रगढ़ द्वारा धारण कराया गया। इस अवसर पर आयोजित यज्ञ के पश्चात् स्वामी जी ने कहा कि माता-पिता की सेवा करने वाला दुखी दरिद्र नहीं होता। दूसरे के धन को मिट्टी तथा दूसरे की बहन-बेटी को अपनी बहन-बेटी समझो, फिर कोई झगड़े नहीं। जिस गृह में वेदमंत्र होते हैं, वे गृह स्वर्ग बन जाते हैं। वाणी शुद्ध और पवित्र बोलनी चाहिए।

इस अवसर पर सुमन कुमार वैदिक ने अपने उद्‌बोधन में पांच प्रकार के यज्ञों की व्यवस्था करते हुए कहा कि ब्रह्मयाग का अर्थ जहां ब्रह्म की प्रतिभा का वर्णन करना है, वहीं अग्निहोत्र को देवपूजा कहा गया है, जो एक विमान है। जो हमें विमान के समान देवलोक में ले जाता है। पितृयाग का अभिप्राय जो पित्रों ने महान कार्य किये हैं, संतान को उनसे ऊंचा कर्म करना चाहिए। पिता की पुत्र से उपमा नहीं दी जाती। पुत्र की पिता से उपमा दी जाती है। पिता से जो उर्ध्व कर्म करता है, वही पुत्र कहलाता है। अतिथि वह होता है, जो हमारे यहां आकर ज्ञान दे। सेवा निवृत्त उपजिला अधिकारी योगेश बोहरा ने इस परिवार का परिचय दिया। यह सारा परिवार आर्य विचारों पर चलता है।

प्रवेश प्रारम्भ है

आर्ष कन्या गुरुकुल विद्या मंदिर, रसूलपुर (कायस्थ) मड़िया व गांव, जानकीपुरम, लखनऊ में जहां वैदिक शिक्षा के साथ ही उ. प्र. मा.शिक्षा परिषद के अनुसार भी शिक्षा दी जाती है, प्रवेश जारी है।

-आर्य विश्वव्रत शास्त्री
08795839308

आर्यसमाज का चुनाव सम्पन्न

भिलाईनगर, छ.ग. (रवि आर्य)। आर्यसमाज सैक्टर-6 की साधारण सभा में नई कार्यकारिणी का गठन खेलेन्द्र मोहन गिरधर के नेतृत्व में सर्वसम्मति से किया गया। तदनुसार जितेन्द्र प्रकाश मलहोत्रा- प्रधान; रवि आर्य- मंत्री; तथा रवीन्द्र गुप्ता- कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

आर्य युवक-युवती चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

महान उन्नायक थे दयानन्द : कैलास मेघवाल

ईश्वर दयाल माथुर
जयपुर (राज.)

शिविर में उपस्थित युवक-युवतियां व अन्य- केसरी।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, वैदिक वीरांगना दल एवं अग्रवाल समाज, मालवीय नगर के संयुक्त तत्वावधान में आर्य युवक-युवती अवासीय शिविर अग्रसेन भवन, मालवीय नगर में सम्पन्न हुआ। शिविर में 117 शिविरार्थियों को योग, ध्यानोपासना, कमाण्डो, मार्शल आर्ट, सूर्य नमस्कार, स्तूप (पिरामिड) निर्माण एवं लाठी संचालन आदि का प्रशिक्षण निपुण प्रशिक्षक एवं योगाचार्यों द्वारा दिया गया। शिविरार्थियों ने प्रातः चार बजे से रात्रि 10 बजे तक कठोर दिनचर्या एवं अनुशासन-पालन का परिचय दिया। शिविर के समापन समारोह में अपने संबोधन में राजस्थान विधान सभाध्यक्ष मा0 कैलास मेघवाल ने अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा कि यदि दयानन्द सरस्वती जैसी प्रतिभा का प्रादुर्भाव नहीं होता, तो हिन्दू समाज जातिवाद, अस्पृश्यता, अन्धविश्वास, पाखण्ड एवं अशिक्षा, पराधीनता के गर्त में ही पड़ा रहता। यदि आल्पायु में ही स्वामी जी का निर्वाण नहीं हुआ होता, तो देश से अशान्ति, कटुता एवं अराजकता मिट गयी होती। शिविर के दौरान ही सेठ लक्ष्मीनारायण स्मृति वीरांगना पुरस्कार व सम्मान भी लोकार्पित हुआ। 2014 के लिए यह सम्मान सवाई माधोपुर की वीरांगना रचना सैनी को प्रदान किया गया, जिसने 4 वर्ष के बालक को बचाते हुए उसके अपहर्ता को गिरफ्तार भी कराया। शिविराध्यक्ष आर्य युवक परिषद (राज0) के प्रदेशाध्यक्ष यशपाल यश, पृथ्वीराज (सचिव विधानसभा), श्रीमती अनिला कोठारी, दीपांकर यश, यशोवीर, महेन्द्र भाई एवं हरिचरण सिंहल ने शिविर को विशेष रूप से संबोधित किया। दुर्गा शर्मा ने आगन्तुक समागम का स्वागत किया, तथा वैदिक वीरांगना दल की अध्यक्षा अनामिका शर्मा ने शिविरार्थियों को पुरस्कृत किया। मालवीय नगर अग्रवाल समाज के अध्यक्ष हरिचरण सिंहल ने धन्यवाद दिया।

योग दिवस पर शिविर का आयोजन

धर्मवीर आर्य
केसरगंज (बहराइच) उ.प्र.

आर्यसमाज यमलार्जुनपुर केसरगंज एवं आर्यकुल योगपीठ द्वारा 21 जून 2015 को विश्वयोग सूत्र धारा से जुड़ते हुए योग शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में यज्ञ, आसन, व्यायाम के साथ ही वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किये।

डॉ0 अभयमित्र आर्य ने कहा कि अस्वस्थ अवस्था में आयुर्वेदिक औषधियों के साथ योगासन किया जाए, तो स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। उमाकान्त मिश्र ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि कि योग से समाज को एक नई दिशा मिलेगी। अतः योगासन के शिविर लगने चाहिए।

इस अवसर पर विश्व योग दिवस के उपलक्ष्य में 22 से 28 जून तक सात दिवसीय योग शिविर का आयोजन किया गया, जिसका संचालन योगासन में सिद्धहस्त प्रधान आर्य समाज, धर्मवीर आर्य ने किया तथा व्यवस्था सत्यमित्र आर्य ने की। शिविर समापन के अवसर पर डॉ0 अभयमित्र आर्य, सत्यमित्र आर्य, उमाकान्त मिश्र सहित अनेक लोगों ने संबोधित किया।

इस अवसर पर धर्मदेव आर्य, शिवनारायण, त्रिवेनी प्रसाद, कुंवर बहादुर, रामसुन्दर, रघुराज प्रसाद वर्मा, नरेन्द्र कुमार, कौशल कुमार, रामकृपाल सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

गुरुकुल द्वारा पांच चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

आचार्य मनुदेवार्य
आमसेना (ओड़िसा)।

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में गुरुकुल आश्रम आमसेना की ओर से पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ते प्रभावों के कारण अपनी प्राचीन संस्कृति से वियुक्त होते युवक-युवतियों को प्राचीन संस्कृति का ज्ञान देने, आत्मरक्षा करने, तथा शरीर को स्वस्थ रखने के लिए पांच ग्रीष्मकालीन शिविरों का आयोजन किया गया।

प्रथम, नुआपाड़ा अभ्यारण्य के सुनाबेड़ा के पास स्थित माता परमेश्वरी कन्या छात्रावास में कन्याओं का शिविर लगाया गया। शिविर में 60 से अधिक कन्याओं ने भाग लिया।

स्वामी ओमानन्द छात्रावास नुआगां 'क' कन्धमाल में आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन भी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस शिविर में भी 60 से अधिक छात्रों ने भाग लिया।

तीसरा शिविर परममित्र आर्ष गुरुकुल गेरवानी रायगढ़ में सार्वदेशिक आर्य वीरदल के संचालक स्वामी देवव्रत के सानिध्य में संपन्न हुआ। इसमें 90 से अधिक छात्रों ने भाग लिया।

चौथा शिविर आदिम गुरुकुल आश्रम कुन्दुली कोरापोटा में चला। इस शिविर में 70 से अधिक छात्रों ने भाग लिया।

आर्य वीरदल का पांचवां शिविर आर्य समज सम्बलपुर में चला। इस शिविर में 50 छात्रों ने बड़े उत्साह से भाग लिया।

इन सभी शिविरों में प्रशिक्षण का कार्य गुरुकुल आश्रम आमसेना के छात्रों ने किया तथा आशीर्वाद स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी व्रतानन्द जी, उपाचार्य डॉ0 कुंजदेव मनीषी, आचार्य रणजीत विवत्सु आदि ने दिया। सभी शिविरों की आर्थिक व्यवस्था परममित्र मानव निर्माण संस्थान तथा गुरुकुल आश्रम, आमसेना की ओर से की गयी।

ज़रा याद करो कुर्बानी...

युक्ति रुस्तगी

सरफरोसी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।।

प्रत्येक देशवासी के लिए स्वाधीनता दिवस एक पावन पर्व है। गुलामी से मुक्त होकर स्वतंत्रता की सांस लेना कोई कम महत्व की बात नहीं है। कहते हैं कि "पराधीन सपनेहुं सुख नाहीं" अर्थात् पराधीनता सपने में भी सुखकारी नहीं है। यही नहीं, रवीन्द्रनाथ टैगोर ने ईश्वर से कामना करते हुए लिखा था– "जहां मन में कोई डर न हो, और मस्तक गर्व से ऊंचा हो, जहां ज्ञान के प्रवाह पर कोई प्रतिबन्ध न हो, और स्पष्ट विचारों की निर्मल सरिता निरर्थक रूढ़िग्रस्तता के मरुथल में लुप्त न हो जाए, हे परमपिता! ऐसे स्वाधीनता के स्वर्ग में मेरा देश जाग्रत हो।"

आज हमारे देश को आजाद हुए 68 साल पूरे हो गये हैं। 15 अगस्त 1947 को आज के ही दिन प्रधानमंत्री पं0 जवाहरलाल नेहरू ने लालकिले की प्राचीर पर तिरंगा फहराया था। इससे पहले स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए एक लम्बा संघर्ष चलता रहा। इस संग्राम का सूत्रपात वर्ष 1857 में ही हो गया था, जब महारानी लक्ष्मीबाई, मंगल पाण्डे, तात्या टोपे, कुंवर सिंह तथा नाना साहब जैसे वीरों ने मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतंत्रता संग्राम छेड़ा था। स्वाधीनता संग्राम की यह चिंगारी निरंतर सुलगती रही। इस आजादी को प्राप्त कारने के लिए भारत मां के लाखों सपूतों ने अपने प्राणों की आहुतियां दे दीं। पं0 रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु, चन्द्रशेखर आजाद के बलिदान व महात्मा गांधी, तिलक, गोखले, लाल लाजपत राय व मोतीलाल नेहरू जैसे जननायकों को भला कौन भुला सकता है। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने तो यहां तक कह दिया– "स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, और इसे मैं लेकर रहूंगा।"

पर अफसोस की बात है कि आज 68 साल बाद हम संघर्षों से मिली इस आजादी की महत्ता को भूलते जा रहे हैं। राष्ट्रधर्म, समाज धर्म के प्रति व्यक्ति अपने कर्तव्य को भूलता जा रहा है। कर्तव्य को भूलना ही इस देश की अवनति का कारण बनता जा रहा है।

वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..

तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारितं होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए और चुनिए एक सुयोग्य जीवन साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 350/- तथा तीन बार की रु. 500/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, उ.प्र. (चलभाष : 08273236003)

वैवाहिक कॉलम रिश्ते ही रिश्ते

जंगे आजादी में शहादत का गवाह है दिल्ली का ऐतिहासिक लालकिला

आज हम भूल गये हैं कि इस देश को आजाद कराने के लिए क्रांतिकारी हंसते–हंसते फांसी के फंदे पर झूल गये। कैसी दीवानगी थी उनमें। अशफाक ने कहा था– "जब से सुना है हमने मरना ही जिन्दगी है, कातिल को ढूंढते हैं सिर पर कफन लिए।"

आजादी के बाद जहां एक ओर हमने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक एवं शिक्षा व खेल के क्षेत्र में अपने कीर्तिमान स्थापित किये हैं, वहीं दूसरी ओर अपने सांस्कृतिक मूल्यों को खोया भी है, जिसका परिणाम यह हुआ कि देश में बेकारी, गरीबी, शोषण तथा आतंकवाद जैसी समस्याएं बढ़ती जा रही हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी आजादी के मूल्य को समझें, देश की सीमाओं से प्रेम करें, क्योंकि देशप्रेम ही हमें राष्ट्रीयता से जोड़ता है। हमे अपने देश पर गर्व करना चाहिए, क्योंकि हमारा देश दुनिया में अनोखा देश है। कहा भी गया है–

"युनान मिश्र रोमा
सब मिट गये जहां से,
कुछ बात है कि हस्ती
मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन
दौरे जहां हमारा।"

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा (उ0प्र0) द्वारा मुद्रित व प्रकाशित

अत्यंत आकर्षक, बहुरंगी कलेवर, तथा उत्तम कागज युक्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ तथा लघु पुस्तकें (ट्रैक्ट्स)

महर्षि दयानन्द की विशेषताएं

यह महात्मा नारायण स्वामी द्वारा ऋषिराज के गौरवमयी व्यक्तित्व व कृतित्व पर महत्वपूर्ण लघु पुस्तिका है।

पृष्ठ– 12, बहुरंगी आर्ट पेपर युक्त टाइटिल, उत्तम कागज, संस्करण– 2015,

मूल्य– 8/–रु0

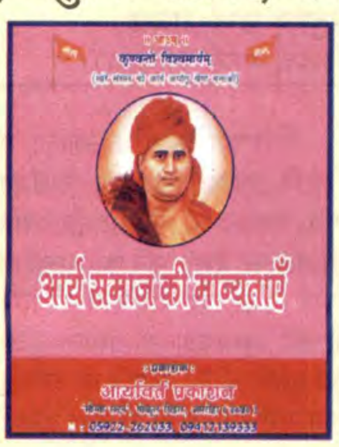

आर्य समाज की मान्यताएं

आर्य समाज के सिद्धांतों पर महात्मा नारायण स्वामी द्वारा लिखित एक संग्रहणीय, पठनीय व स्तरीय लघु पुस्तिका।

पृष्ठ– 12, बहुरंगी आर्ट पेपर युक्त टाइटिल, उत्तम क्वालिटी का कागज, संस्करण– 2015,

मूल्य– 8/–रु0

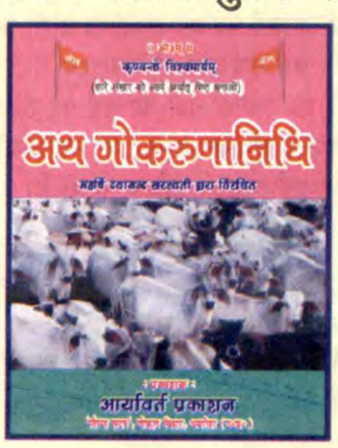

अथ गोकरुणानिधिः

इसमें महर्षि दयानन्द ने गऊ की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए गोपालन, गोसंवर्द्धन, तथा गो वंश की रक्षा का आह्वान है।

पृष्ठ– 16, बहुरंगी आर्ट पेपर युक्त आकर्षक टाइटिल, उत्तम क्वालिटी का कागज, संस्करण– 2015,

मूल्य– 8/–रु0

आर्योद्देश्यरत्नमाला

महर्षि दयानन्द द्वारा निर्मित इस लघु पुस्तिका में ईश्वर, धर्म-अधर्म, पुण्य-पाप आदि सहित वैदिक सिद्धांतों का सम्यक ज्ञान है।

पृष्ठ– 12, बहुरंगी आर्ट पेपर युक्त आकर्षक टाइटिल, उत्तम क्वालिटी का कागज, संस्करण– 2015,

मूल्य– 8/–रु0

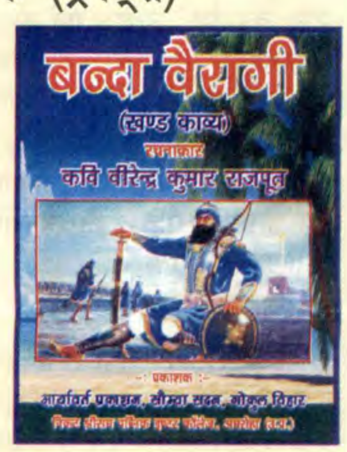

बन्दा वैरागी

पृष्ठ– 64, बहुरंगी आर्ट पेपर युक्त टाइटिल, उत्तम कागज, संस्करण– 2015,

तो आइए! आज ही आर्यावर्त प्रकाशन के साहित्य प्रचार मिशन से जुड़िए...

■ आज ही बुक कराएं अपना आदेश और घर बैठे पाएं दुर्लभ संग्रहणीय व जीवनोपयोगी बहुमूल्य साहित्य। ■ सभी प्रकाशनों पर 10 प्रतिशत की छूट। सभी पुस्तकें सैकड़ा के हिसाब से लेने पर विशेष छूट। न्यूनतम 500/– रु0 मूल्य तक के क्रय पर डाक–व्यय मुफ्त। आप अपनी अथवा किसी अन्य की कोई भी कृति मुद्रित व प्रकाशित कराने के लिए भी सम्पर्क कर सकते हैं। पता है–डॉ0 अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा–244221 (उ.प्र.) ☎: 05922–262033, 09412139333

जयपुरिया इन्स्टीट्यूट में योग शिविर सम्पन्न

योगासन से बनता है सुडौल और कांतिमय शरीर

नोएडा (हर्ष बवेजा)। समयोग फॉउन्डेशन द्वारा जयपुरिया इन्स्टीट्यूट में लगाये गये एक दिवसीय शिविर में विद्यार्थियों को संबोधित करते हुये योग गुरू दानवीर विद्यालंकार ने कहा कि भाग–दौड़ भरी जिन्दगी में तनाव, दूषित वातावरण एवं विषाक्त खान–पीन से प्राणायाम स्वास्थ्य की रक्षा करता है तथा प्राणायाम से शरीर को असीमित उर्जा मिलती है जिससे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता का कई गुना अधिक विकास हो जाता है फलस्वरूप शरीर पर विषाक्त तत्वों, मिलावट वाली चीजों, पेस्टी साइडस का प्रयोग, विषाक्त फल व सब्जियां, मच्छरों का काटना, दूषित वातावरण, ट्रैफिक आदि के नकारात्मक प्रभावों से प्राणायाम शरीर की रक्षा करते हैं। प्राणायाम का शरीर व मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है, जिससे शरीर अंगों और नाडियों का शोधन होता है।

योगगुरू विद्यालंकार जी ने वार्मअप, स्ट्रेन्थनिंग मूवमेंट एवं बैलेंसिंग पोस्चर्स व ताडासन, वृक्षासन, नटराज आसन, पादहस्तासन, मर्कटासन, उत्तान पाद आसन, नौकासन, सर्वांग, हलासन, भुजंगासन, धनुर् आसन, मण्डूकासन आदि का अभ्यास कराते हुये कहा कि आसन शरीर को लचीलापन प्रदान कर पोषण करते हैं। शरीर सुडौल और कान्ति मय बन जाता हैं।

योगगुरू ने कपालभांति, अनुलोम–विलोम, भ्रस्तिका, चन्द्रभेदी, शीतली, शीतलारी एवं भ्रामरी प्राणायाम कराते हुये कहा कि प्राणायाम का मन–मस्तिष्क पर अद्भुत प्रभाव पड़ता है। प्राणायाम के नियमित अभ्यास से बी0पी0, हाइपरटैंशन, माइग्रेनपेन, मैमोरीलॉस, दौरे पडना, ब्लॉकेज, हार्ट प्रॉबलम आदि बीमारियां ठीक हो जाती हैं, मन सकारात्मक हो जाता है, शरीर और मन में स्फूर्ति का संचार हो जाता है। उन्होंने ध्यान का अभ्यास कराते हुये कहा कि 15 से 20 मिनट ध्यान प्रतिदिन करने से 7–8 घन्टे की नींद से जो एनर्जी मिलती है उतनी 15–20 मिनट के ध्यान से मिल जाती है। इस अवसर पर डॉ0 सोनिया, डॉ0 अग्निदेव शास्त्री, डॉ0 वी0के0 तोमर, डॉ0 दीपक सिंह, डॉ0 नीवा भंडारी, डॉ0 राजीव ठाकुर, डॉ0 विनीता श्रीवास्तव, प्रो0 अब्दुल कादिर, डॉ0 शिखा भाटिया, प्रो0 निधि सिंह एवं अन्य स्टाफ और फैकल्टी मेम्बर्स उपस्थित रहे।

बुढ़ापे के रोग के उपचार व सरल चिकित्सा

डॉ० स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती

1- 60 साल की उम्र में आंखों में मोतियाबिन्द आ जाते हैं, अतः फोको पद्धति ऑपरेशन करा मणी (लैंस) डलवायें।

2- बुढ़ापे में कब्जियत आम रोग है, अतः सनाय पत्रों की कोपी लें या अरण्डी का तेल सप्ताह में एक बार अवश्य पियें, पेट सदा साफ रहेगा।

3- अगर पायलस व मस्से हैं, तो पाइलेकस गोली लें या होमियोपैथिक दवा एन.वी. 30 रात में, थिएकयुलस हिप 200 प्रातः लें।

4- प्रातः उठकर तांबे के लोटे का पानी पियें, उन्हें कब्ज पाइलेस व एसिडिटी कभी नहीं होती है। अगर स्वांस की बीमारी शुरु हुई हो तो ईफैड्रिम (Ephedrim)या सुबाटोले की गोली प्रातः लें व कनसव दिन में तीन बार पियें।

5- अगर हाई बी0पी0 है, तो नींबू व काला नमक डालकर पानी पियें।

6- अगर शुगर का असर है, तो नींबू पत्र 5 खावें तथा दिन में गिलोय सत या बारामासी के फूल या डुगमार के पत्ते चबावें।

7- अगर हार्ट ट्रबल है, तो अर्जुनारिष्ट दिन में तीन बार पियें।

8- बुढ़ापे में कमर दर्द व घुटनों में कमर दर्द आम बात है, अतः रात को मेथी के दाने की एक फाकी (10 ग्राम) पानी में भिगो दें, प्रातः पानी पी, व शेष मेथी खा लेवें तथा महायोगराज गुगुल की 2-2 गोलियां दिन में तीन बार लेवें।

9- बुढ़ापे में प्रोस्टेट ग्लैण्ड बढ़ जाती हैं, अतः चन्द्रप्रभा वटी तथा गोखन चूर्ण की फाकी लेवें।

10- जीवन की शिथिलता ही बुढ़ापा है, अतः आती हुई कमजोरी को रोकने के लिए (समर्थ हों तो) बसन्त कुसुमाकर रस व मकरध्वज वटी लेवें। वरना जेरी फोर्ट नियो या निरोबिन की 1-1 गोली दिन में 2 बार लेवें। अन्य रोगों के लिए चिकित्सीय परामर्श लें या दूरभाष-09875063680 पर सम्पर्क करें।

-डॉ. एम.एल. राव उर्फ स्वामी डॉ. आर्येशानन्द सरस्वती, मनन आश्रम, पिण्डवाड़ा (राजस्थान) मोबा. : 09413266245

संक्षिप्त

चुनाव सम्पन्न

कोटद्वार (सुरेन्द्रलाल आर्य)। आर्य गिरधारीलाल महर्षि दयानन्द ट्रस्ट (पंजी0) के चुनाव में सुरेन्द्रलाल आर्य को लगातार नौवीं बार सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना गया। वयोवृद्ध शिक्षाविद् वी0डी0 उनियाल की अध्यक्षता, तथा कै0 प्रेमलाल सन्तवाल सचिव के संचालन में सम्पन्न हुए कार्यक्रम में उपजिलाधिकारी कोटद्वार को मुख्य संरक्षक, संरक्षक चक्रधर शर्मा 'कमलेश', संरक्षक एवं कानूनी सलाहकार एडवोकेट जगमोहन भारद्वाज, निदेशक आचार्य धर्म शास्त्री एवं दर्शनलाल चौधरी, अध्यक्ष सुरेन्द्र लाल आर्य, उपाध्यक्ष महेन्द्र अग्रवाल एवं वीरसिंह, सचिव कै0 प्रेमलाल सन्तवाल चुने गये।

जयन्ती मनाई

रुड़की। आर्य समाज, रामनगर में महान स्वतंत्रता सेनानी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक एवं चन्द्रशेखर आजाद की जयन्ती के उपलक्ष्य में 23 जुलाई को भव्य कार्यक्रम किया गया। यह जानकारी तेजपाल सिंह आर्य, उपाध्यक्ष ने दी।

बैठक सम्पन्न

लखनऊ। आर्य प्रतिनिधि सभा, 5- मीराबाई मार्ग, लखनऊ की अन्तरंग सभा की बैठक 9 अगस्त 2015 को आर्य समाज, शास्त्रीनगर, मेरठ में सम्पन्न हुई।

शताब्दी समारोह १८ से

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के पीछे स्थित आर्य समाज, डालीगंज का शताब्दी समारोह 18 से 20 सितम्बत–2015 तक छत्रपति शिवाजी सभागार, रामाधीन सिंह कालेज, निकट आईटी चौराहा में होगा। इस अवसर पर देश के प्रसिद्ध आर्य संन्यासी, विद्वान, विदुषियां व राजनेता पधार रहे हैं। यह जानकारी प्रेमशंकर शुक्ल प्रधान एवं आनन्द चौधरी मंत्री ने दी है।

वार्षिकोत्सव १५ से

एटा। आर्य समाज, आगरा रोड का वार्षिकोत्सव 15 से 17 नवम्बर तक होगा। यह जानकारी रामस्वरूप आर्य (09410834890) ने दी। इस अवसर पर आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान, भजनोपदेशक व आर्य नेता पधार रहे हैं।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

सहारनपुर। आर्य समाज खलासी लाइन के प्रांगण में 61वां वार्षिकोत्सव धूमधाम से संपन्न हुआ। इस अवसर पर वेद, धर्म, संस्कृति, एवं गोरक्षा सम्मेलन हुए। अध्यक्षता बलराज तोमर ने की तथा संचालन डॉ. पूर्णचन्द्र शास्त्री ने किया।

रजत जयन्ती २७ से

होशंगाबाद। आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, नर्मदापुरम्, होशंगाबाद में आचार्य जगद्देव नैष्ठिक के गुरुकुल में आचार्य पद को सुशोभित करने के 25 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 27 से 29 नवम्बर तक आचार्य पद रजत जयन्ती समारोह होगा। यह जानकारी आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक ने दी है।

प्रवेश प्रारम्भ

• **आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय**, सिरसागंज फिरोजाबाद में प्रवेशिका से आचार्य पर्यन्त कक्षाओं में प्रवेश प्रारम्भ हैं। सम्पर्क सूत्र- प्राचार्य, 9412266960

• **ज्ञानगंगा गुरुकुल महाविद्यालय** तारापुर, पत्रालय- गोंडा, जि0- अलीगढ़ में प्रवेश प्रारम्भ हैं। -स्वामी प्रशान्तानन्द सरस्वती (मुख्य अधिष्ठाता, 953610997/ बच्चू सिह आर्य (प्राचार्य) 9084180100

• **आचार्य कुल विश्ववारा संस्कृति विद्या आश्रम**, ग्राम- सरसपुर भूड़, जि0- बदायूं, उ0प्र0 में प्रवेश प्रारम्भ हैं। -आचार्य विजयदेव नैष्ठिक (संस्थापक), 9719495312

• **आर्ष कन्या गुरुकुल**, भुसावर, जि0 भरतपुर, राज0 में कक्षा 4,5 व 6 में प्रवेश प्रारम्भ हैं।- आचार्या प्रियंका आर्या, 09694892735, 08441087408

निर्विरोध हुआ वार्षिक निर्वाचन

रुड़की (हरिद्वार)। आर्य समाज, रामनगर के सर्वसम्मति से सम्पन्न वार्षिक निर्वाचन में उषा रानी आर्या- प्रधाना, यशवीर सिंह- कार्यकारी प्रधान, तेजपाल सिंह चौहान- उपाध्यक्ष, रामेश्वर प्रसाद सैनी- महामंत्री, जेडी त्यागी- कोषाध्यक्ष चुने गये।

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव सम्पन्न

जयपुर (राजस्थान)। आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक निर्वाचन निर्विरोध सम्पन्न हुआ, जिसमें विजय सिंह भाटी- प्रधान, सुधीर कुमार शर्मा- मंत्री, व वरुण सिंह शास्त्री कोषाध्यक्ष चुने गये। इस अवसर पर मदन लाल आर्य, अर्जुन देव चड्ढा, हरेन्द्र कुमार आर्य, ओमप्रकाश आर्य तथा जगदीश प्रसाद आर्य अलग-अलग सम्भागों से उपप्रधान चुने गये।

माँ सत्यप्रियायति एवं महात्मा चैतन्य मुनि सम्मानित

अनुराग शर्मा अजल
महादेव, मण्डी (हि0प्र0)।

हिमाचल प्रदेश के सोलन में डी.ए.वी. प्रबन्ध समिति द्वारा आयोजित भव्य समारोह में मां सत्यप्रियायति एवं महात्मा चैतन्य मुनि को सम्मानित किया गया। यह सम्मेलन महात्मा जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ तथा मुख्य अतिथि समिति के अध्यक्ष पूनम सूरी थे। देशभर से आये हजारों डी.ए.वी. संस्थानों से जुड़े हजारों व्यक्ति पधारे।

उल्लेखनीय है कि पूज्य माता जी तथा महात्मा जी ने सन् 1996-97 से लेकर आज तक डी.ए.वी. के कालेजों तथा स्कूलों में सैकड़ों की संख्या में चरित्र निर्माण एवं वैदिक चेतना शिविर संचालित किये हैं, जिनमें से बनीखेत, अमृतसर, जालन्धर, बटाला, नकोदर, फिरोजपुर, जलालाबाद, मोहन आश्रम, हरिद्वार, पंचकुला तथा अबोहर आदि कालेजों में लगाये गये शिविर विशेष उल्लेखनीय हैं।

सोमेन्द्र शास्त्री जेआरएफ में चयनित

पूठ। गुरु द्रोणाचार्य की तपस्थली, एकलव्य की साधनास्थली, कौरव-पांडवों की परीक्षास्थली, पूठ (पुष्पावती) में स्थापित महर्षि दयानन्द सरस्वती गुरुकुल महाविद्यालय, पूठ (पुष्पावती) के स्नातक सोमेन्द्र शास्त्री ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित जूनियर रिसर्च फैलोशिप परीक्षा उत्तीर्ण कर गुरुकुल पूठ का नाम उज्ज्वल किया है। यूजीसी की परीक्षा में लगातार सफलता का क्रम रखते हुए सोमेन्द्र शास्त्री ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का परचम लहराया है। सोमेन्द्र शास्त्री अपनी सफलता का श्रेयस्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती (पूर्व आचार्य धर्मपाली जी) महाराज संचालक- गुरुकुल पूठ को देते हैं।

एक अनूठे व्यक्तित्व थे पूर्व राष्ट्रपति एपीजे कलाम एक अपूर्णनीय क्षति

भारत को एटमी ताकत से नवाजने वाले बच्चों के प्यारे पूर्व राष्टपति मिसाइलमैन डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम अब हमारे बीच नहीं रहे। डॉक्टर कलाम 2002 से 2007 तक देश के 11 वें राष्टपति रहे। राष्टपति का पदभार संभालने के बाद उन्होंने राष्टपति होने का जैसे मतलब ही बदल दिया था। वे राष्टपति और राष्टपति भवन को लोगों के करीब लेकर आए।

राजनीतिक तौर पर राष्टपति के रूप में भी उनका कार्यकाल खासा प्रभावी रहा। राष्टपति पद की कुर्सी संभालने के एक महीने बाद ही उन्होंने सरकार की तरफ से लाए गए चुनाव सुधार विधेयक को वापस कर दिया। मतलब ये कि रबर स्टाम्प माने जाने वाले पद को एक अलग तरह से उन्होंने परिभाषित किया। राष्टपति बनने के बाद उन्होंने देश के हर एक राज्य का दौरा किया।

कलाम स्वभाविक तौर पर एक शिक्षक, एक वैज्ञानिक थे लेकिन उन्होंने राष्टपति पद पर एक परिपक्व राजनेता की तरह छाप छोड़ी। जिस तरह वे राष्टपति दरबार को आम जनता के करीब लाए, वो बाकी राष्टपतियों के लिए भी एक उदाहरण बन गया। डॉक्टर कलाम का मानना था कि असल प्रतिभाएं ग्रामीण भारत में बसती हैं और उन्हें निखारने की जरूरत है। गांव को देश के विकास की धुरी से जोड़ने का उनका एक सपना था। राष्टपति पद से रिटायर्ड होने के बाद भी लोगों के लिए वे प्रेरणास्रोत बने रहे। अंतिम समय तक वो लगातार सक्रिय रहे और ज्ञान की अलख जगाने का काम करते रहे।

डीआरडीओ के वैज्ञानिक के तौर पर उन्होंने भारत में मिसाइल टेक्नोलॉजी के अगुवा के तौर पर काम किया। उन्हीं की देखरेख में देश में निर्मित पहले प्रक्षेपास्त्र एसएलवी-3 को विकसित किया गया।

1998 के पोकरण परमाणु विस्फोट में भी उनकी बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका थी। और उनकी बदौलत ही भारत दुनियाभर में एक एटमी ताकत के रूप में पहचाना जाने लगा।

15 अक्टूबर1931 में तमिलनाडु के रामेश्वर में जन्म लेने वाले इस महान वैज्ञानिक को उम्मीद थी कि 2020 तक भारत दुनिया में एक नई पहचान बना लेगा। उनकी इसी उम्मीद ने उस समय देशवासियों की उम्मीद जगाने का काम किया। डॉक्टर कलाम की देखरेख में भारत ने पृथ्वी, अग्नि जैसी मिसाइलों को विकसित किया और इसकी वजह से चीन और पाकिस्तान भारत की जद में आए।

कुल मिलाकर भारत को सुरक्षा की दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने में डॉक्टर कलाम का योगदान बेहद महत्वूर्ण है। देश के लिए दिए गए अमूल्य योगदान के लिए 1997 में उन्हें भारत रत्न से नवाजा गया था। डॉक्टर कलाम तो हम सब को छोड़कर चले गए लेकिन आधुनिक भारत को बनाने में उनके योगदान को देश सदैव याद रखेगा।

भारत के राष्ट्रपति के रूप में उन्होंने जो महान परम्पराएं तथा उच्च स्तरीय मानदण्ड स्थापित किये, वे भारतीय इतिहास के लिए एक अमूल्य धरोहर व अनुकरणीय सिद्ध होंगे। सच्चे अर्थों में भारतीयों ने एक महान व्यक्तित्व खो दिया है।

राज्य भाषा के रूप में हिन्दी के प्रयोग की आवश्यकता

प्रो. डॉ. वीरेन्द्र कुमार दुबे सलाहकार- महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

भारत सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग की स्थापना हिन्दी के प्रयोग को लागू करने की दृष्टि से की गई है और इसके द्वारा वार्षिक कार्यक्रम में मंत्रालयों के लिए दिशा निर्देश तैयार किये जाते है। केन्द्रीय हिन्दी समिति का गठन किया गया है, जिसमें केन्द्रीय मंत्री तथा हिन्दी विद्वानों, सांसद एवं राज्य सभा सदस्य को मनोनीत किया जाता है। इसका कार्यकाल तीन वर्ष का है। इसी प्रकार मंत्रालयों की हिन्दी सलाहकार समिति का गठन तीन वर्षों के लिए किया जाता है, जिसकी अध्यक्षता संबंधित मंत्री करते है, इसमें सांसद, राज्यसभा सदस्य तथा हिन्दी विद्वानों को सदस्य के रूप में मनोनीत किया जाता है। इसका कार्यकाल तीन वर्ष का है। मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले साधनों कें उपकरण में हिन्दीं को लागू करने तथा हिन्दीं में प्राप्त पत्रों को उनके उत्तर हिन्दी में देने का प्रयास किया जाता है। मंत्रायल में मुख्य तौर पर हिन्दी सलाहकार समिति द्वारा हिन्दी शब्दों के लिए शब्दावली का भी निर्माण किया जाता है। हिन्दी में कार्य करने वाले गैर हिन्दी भाषी कर्मचारियों को प्रोत्साहित किया जाता है तथा हिन्दी में पुस्तकों का प्रकाशन कर उन्हें प्रस्तुत किया जाता है।

हिन्दी को संविधान में राजभाषा का दर्जा प्राप्त नहीं हो सका, 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया गया था। 7 जून 1955 को 25 सदस्यों की राजभाषा आयोग का गठन कर सम्मलित किया गया था। जिसने अपनी रिर्पोट में माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक वैज्ञानिक तथा तकनीकी शिक्षण संस्थाओं में हिन्दी का माध्यम बनाये जाने की सिफारिश की थी। राष्ट्रपति द्वारा लोकसभा के 20 सदस्य तथा राज्यसभा के 10 सदस्यों की एक संसदीय राजभाषा समिति गठित की थी। सन 1960 में केन्द्रीय हिन्दी निर्देशालय, नई दिल्ली की स्थापना की गई। हिन्दी भाषा के शिक्षण एवं प्रशिक्षण हेतु सन 1961 में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा में स्थापित किया गया है। सन 1961 में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली का गठन किया गया है। सन 1963 में राजभाषा अधिनियम बनाया गया और सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग में वृद्धि हेतु यह समय-समय पर नियम बनाता है।

सन 1985 में जामिया मिलिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में एम. एड. की परीक्षा में हिन्दी तथा उर्दू को मान्यता दी गई है। सन 1987 में आर्युविज्ञान विषय में शोध प्रबंध को हिन्दी में मान्यता दी गई है। सन 1889 में अभियंत्रिकी परीक्षाओं में हिन्दी को मान्यता मिली। सन 1990 में दंतचिकित्सा, विधि स्नातक परीक्षा सन 1991 तथा सन लोकसेवा आयोग की सभी परीक्षाओं में भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिन्दी को सम्मलित करने की मान्यता मिली। कंपनी सचिव संस्थान में भी सचिव की परीक्षाओं में हिन्दी माध्यम की अनुमति दी गई है। भारत सरकार के समस्त मंत्रालय, कार्यालयों, शिक्षण संस्थाओं के कार्य-कलाप तथा केन्द्रीय प्रवेश परीक्षाओं, मूल्यांकन पद्धतियों, प्रतियोगी परीक्षाओं में अंग्रेजी के साथ हिन्दी के प्रयोग की अनिवार्यता कर दी गई है।

हिन्दी कों अंतर्राष्ट्रीय के रूप में प्रसारित तथा संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दिलाने हेतु 10 जनवरी 1975 को नागपुर को प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन आयोजित किया गया था, जिसके अध्यक्ष मारीशस के तत्कालीन प्रधानमंत्री सर शिवसागर गुलाम थे। संयुक्त राष्ट्रसंघ के अधिवेशन में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री पी. वी. नरसिंहराव तथा विदेश मंत्री के रूप में श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने हिन्दी में भाषण दिया था। अभी तक 9 हिन्दी विश्व सम्मेलन विभिन्न देशों में आयोजित हो चुके हैं। संयुक्त राष्ट्रसंघ के सभा भवन में विश्व हिन्दी सम्मेलन का उद्‌घाटन करते हुए, महासचिव बानकी मून ने कहा था कि हिन्दी भारत की एक सुन्दर भाषा है, यह दुनियाभर की संस्कृतियों के बीच कुल का कार्य कर रही है। विश्व के विभिन्न देशों में हिन्दी भाषा के अध्ययन के प्रति तथा शोध कार्य हिन्दी में किये जा रहे हैं। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी एवं केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद, दिल्ली के द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर सेमिनार तथा अधिवेशन आयोजित कर हिन्दी में कार्य कर रहे हैं। भारत के गैर हिन्दी प्रांतों में भी हिन्दी संस्थाएं तथा विश्वविद्यालयों में हिन्दी के अध्यापन कार्य एवं शोध कार्य कराये जा रहे हैं। केन्द्रीय हिन्दी निर्देशालय तथा वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा हिन्दी को पूर्ण रूप से आगे करने की दशा में कार्य किये जा रहे है। अब आवश्यकता इस बात की है कि केन्द्र सरकार के गृहमंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा देश के सभी विश्वविद्यालयों में हिन्दी को लागू करने की दशा में अध्यापन एवं शोध कार्य हिन्दी में कराये जाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए योजना तैयार करे ताकि हिन्दी को आगे बढ़ने का मौका मिल सके।

आर्य समाज नई सड़क उज्जैन दि. ०३.०३.२०१५ (मध्य प्रदेश) पिन ४५६००१

जनवाणी

सुन्दर जानकारियों से समाहित है केसरी

महोदय,

आर्यावर्त केसरी समाचार-पत्र बहुत सुन्दर जानकारियों को समाहित किये रहता है। चार वर्ष पूर्व मुझे एक नौजवान ने सदस्य बनाया था। मैं एटा आर्य समाज का प्रधान हूं। यहां मंत्री डॉ0 सुरेशचन्द्र शास्त्री हैं। यहां आर्य समाज द्वारा वर्ष में 50 दिन उपदेशों द्वारा ग्रामों में घूम-घूम कर प्रचार कार्य किया जाता है। हर पर्व पर कार्यक्रम होता है।

रामस्वरूप आर्य, आगरा रोड, एटा, फोन ०९४१०८३४८९०

सरकार से उम्मीद

महोदय,

देश में मद्यपान, मांसाहार, दुराचार, भ्रष्टाचार जिस गति से बढ़ रहा है, वह चिन्तनीय है। क्या भारतीय जनता पार्टी की सरकार इस दिशा में कुछ कारगर कदम उठाकर समस्या का समाधान निकालने का प्रयास करेगी। या पूर्ववर्ती सरकारों के समान ही स्थिति ज्यों की त्यों बनी रहेगी। यदि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस दिशा में कुछ रचनात्मक कार्य कर सके, तब ही उनकी सार्थकता है। अन्यथा उपनमें और पूर्ववर्तियों में क्या अन्तर है?

-अनुरुक्ति आर्या, हिरणमगरी, उदयपुर

नये प्रकाशन : साहित्यकार निर्देशिका-२०१५

आनन्द दीवान द्वारा साहित्यकार निर्देशिका का नियमित प्रकाशन अत्यंत श्रम तथा व्यवसाध्य है। इसके पांचवें अंक के रूप में 2015 का अंक इनके पुरुषार्थ को सिद्ध करता है। निर्देशिका में हिन्दी विषयक शोध रिपोर्ट-2015 सम्बन्धी डॉ0 जयन्ती प्रसाद नौटियाल का आलेख महत्वपूर्ण है। निर्देशिका में वर्णमाला क्रम में हिन्दी साहित्य व पत्रकारिता आदि विधाओं से जुड़े देश भर के अनेक साहित्यकारों व पत्रकारों को सम्मिलित कर विलक्षण प्रतिभा का परिचय दिया गया है।

निर्देशिका के अन्त में मित्रलोक पुस्तकालय में प्राप्त होने वाली पत्र-पत्रिकाओं का भी उल्लेख है।

आवरण पृष्ठ के अन्दर साहित्यकार निर्देशिका प्रविष्टि फार्म का प्रारूप दिया गया है। प्रविष्टि फार्म भरकर इस निर्देशिका को सहजता से प्राप्त करने का मार्ग भी आपने प्रशस्त किया है। श्री दीवान जी के कुशल संपादन में संपादित निर्देशिका सामग्री, प्रस्तुतिकरण, मुद्रण, स्वरूप, कागज आदि सभी दृष्टियों से स्तरीय है।

पता है : श्री आनन्द दीवान, सम्पादक- साहित्यकार निर्देशिका-२०१५, मित्रलोक लाइब्रेरी, २२-तिलक मार्ग, देहरादून-२४८००१ (उ.ख.)
मोबा. : 09897753800

दो प्रतियाँ भेजें

'साहित्य समीक्षा' अथवा 'नये प्रकाशन' स्तम्भ के अन्तर्गत अपनी कृतियों के विषय में सामग्री प्रकाशनार्थ दो प्रतियाँ अवश्य भेजें। धन्यवाद,

-सम्पादक

गतांक में प्रकाशित स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती के आलेख का शेष भाग

कैसे होगा आर्य समाज का कायाकल्प

स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती

आर्यसमाज में गुणवत्ता औरों में संख्या बल। जैन धर्म, ईश्वर की सत्ता नहीं मानता, सम्प्रदाय कोई सा भी क्यों नहीं हो, दिगम्बर जैन राष्ट्र संत तरूण मुनि कड़वे प्रवचन देते है। समाज सुधार के लिए सभी लोग सुनते हैं, पढ़ते भी हैं और सीडी में देखते भी हैं। श्वेताम्बर जैनों में भी मूर्ति पूजक तो हैं ही, साधुमार्गी भी, ऐसे साधुमार्गी वर्षों पहले से आर्य समाज को आर्थिक सहयोग देते रहे हैं, ये सदस्य, अधिकारी, दानदाता भी हैं ऐसे जिन्होने आर्य समाज मॅन्दिर व्यक्तिगत भी बना दिये हैं। ऐसा आर्य समाज मन्दिर गरोठ, जिला-मन्दसौर (मध्य प्रदेश) में बना है। गुजरात में निरात सम्प्रदाय, मूर्तिपूजक नहीं है आर्य समाज के समकक्ष है, आर्य समाज का सहयोगी भी। हिन्दुओं में दादूपंथी, रामस्नेही, राधास्वामी, कबीरपंथी, सिक्ख, स्वामीनारायण वाले आरम्भ में मूर्तिपूजक नहीं थे पर अब धीरे-धीरे अपना रास्ता छोड़ रहे है। संतों महन्तों की किसी न किसी रूप में पूजा चल रही है। गायत्री परिवार में 24 अवतारों की मूर्तियां लगने लग गयी है। आचार्य श्रीराम शर्मा देवी भगवती की भी प्रज्ञा पीठ शक्तिपीठ के रूप में, इन्होंने तो प्रज्ञा पुराण भी बना ली है, कथा वार्ता भी करते हैं। गायत्री फोटो से आरम्भ करके, जो पहले आर्य समाज में थे स्वामी सत्यानन्द जी (जैन धर्मी) जिन्होंने श्रीमद् दयानन्द प्रकाश लिखा, ओजस्वी लेखक, वक्ता भी रहे फिर मन में आया कि रमन्ते रामः का भी अर्थ रमण करने वाला परमात्मा का नाम हो सकता है इसका भी उपयोग ओउम् की तरह होना चाहिए, पर आर्य समाज ने सहमति नहीं दी। तब इन्होंने श्रीराम शरणम् सम्प्रदाय अलग ही बना लिया। श्री पंडित सुधांशु जी को लगा कि आर्य समाज में तो उपस्थिति उंगलियों पर गिनने जितनी, अच्छा हो कि प्रवचन कला का उपयोग स्वतंत्र रूप से किया जाये, तो इनका भी सब कुछ अलग ही चल रहा है। ये आर्य समाज का नाम नहीं लेते, बस इतना ही अन्तर है, शेष सभी कुछ आर्य समाज जैसा ही है।

सुधांशु जी ने वृद्ध आश्रम खोले है, श्रीराम शरणम् वालों ने व्यसनमुक्ति का अभियान जोरों से चला रखा है, यहां तक कि वनवासी क्षेत्र में भी इनका प्रभाव दिखाई देता है। सब जीते जी की माया है, संस्था ट्रस्टीयों के हवाले जो सारे ही सिद्धान्त विरोधी और पौराणिक होकर अंधविश्वासी ही होते हैं अपने मन की करते हुए विरोधी गतिविधि चलाते हैं, उपस्थिति भी उन्हीं की होती है। तीनों आर्य समाज का नाम भी नहीं लेते, भूलकर भी, कोई ऐसा हो तो दर्शक नाराज हो जावे। तब न आर्थिक सहयोग, न उपस्थिति, कुछ भी नहीं। तो फिर जो पैसा दे वही ट्रस्टी। जिसकी दृष्टी, ट्रस्टी, बिगड़ी सृष्टि का भी पतन हो जाता है।

आर्य समाज में एक थे श्री विद्यानन्द जी विदेह, पुलिस के उच्च पदास्थ अधिकारी, समय, नियम के एक दम पक्के, हाँ वाणी में शहद से भी मीठापन आर्य समाजी तो थे ही, अपनी उपमा आप ही रहे। सेवानिवृत्त होने के पश्चात वैदिक धर्म प्रचार में लगे, सन्तानों को भी सुयोग्य बनाया, एक अच्छे संस्कृत के विद्वान दिल्ली के विदेह आश्रम के ईमानदार से संचालक, दूसरे अहमदाबाद गुजरात से हिन्दी दैनिक के संचालक, बाकी के भी पता नहीं क्या कर रहे है, विदेह जी स्वतंत्र चिंतनशील, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने कुछ समय के लिए प्रतिबंधित भी कर दिया था, ग्रन्थ लिखे छपवाये भी, वेद भाष्य भी, कुछ अंश में जैसा हो सका, किया। अपनी संस्था का मुख्य पत्र भी निकालते रहे थे, विदेश प्रवास भी कर आये थे। इनके अनुयायी भी अपने को नामांत में विदेह ही लिखते है।

आर्य समाज छोड़ देने के बाद स्वामी सत्यानन्द, आचार्य श्रीराम शर्मा ने स्वामी दयानन्द और आर्य समाज का अपने प्रकाशनों में विरोध बिल्कुल भी नहीं किया, मौन सम्मति लक्षणम्। अभी तो सुधांशु जी महाराज श्री का साहित्य आर्य समाज का नाम लेते भी न लेते भी आर्य समाज जस का तस ही है न वे मूर्तिपूजा करवाते है, न व्यक्ति पूजा ही, ना अपने को महिमा मण्डित ही, सब कुछ स्वयं की प्रतिभा का प्रकाशन, आर्य समाज में एक दल वेश परिवार का है ये भी अपने को सभी वेश ही नामांत में लिखते है। आर्यसमाज में महिलाओं द्वारा भजन प्रवचन करने का सहयोग भी है। पाखण्ड खण्डन करने वालों का कहीं कहीं आर्य समाज वाले भी प्रचारकों से कह देते हैं कि यहाँ खण्डन मत करना, लोग नाराज हो जायेंगे।

प्रचारकों की संतान भी प्रचारक? हाँ है तो ऐसे भी कुछ सर्वश्री पण्डित नरेशदत्त जी आर्य, पं. सत्यपाल जी पथिक, और कुछ तो सपरिवार वाले भी है। सबसे ज्यादा प्रचारक हरियाणा वाले, उत्तर प्रदेश, पंजाब, राजस्थान अन्य प्रान्तों से भी है। गुजराती एक भी नहीं, न तो वानप्रस्थ न तो सन्यासी ही। सबसे ज्यादा धनवान भारत में, जो सो गुजराती, शिक्षा, संगठन, स्वयं सुधार, कट्टरता, दान इनकी विशेषता है। अब जन्म जाति वालों ने भी अपनी संस्था का आर्य समाजीकरण कर दिया है सभी कुछ आर्यसमाज जैसा ही संगठन।

उपरोक्त वर्णन पुस्तक पढ़कर, सुनकर नहीं, पर स्वयं ही भारत-नेपाल की अर्द्ध शताब्दी परिक्रमा वासी रहकर भुक्तभोगी बनकर ही लिखा है। गुरूकुल शिक्षा, गृहस्थ जीवन में संतानों के संबंध जन्म जाति छोड़कर, उन्हें गुरूकुल शिक्षा दिलाकर और स्वयं वानप्रस्थी और फिर सन्यासी दीक्षा ले प्रवास तो जीवन भर किया और नाम ही प्रवासानन्द रख दिया गुरू जी ने। बचपन से ही आर्य पत्र पत्रिकाओं में लेख, यात्रा संस्मरण, पुस्तकों का प्रकाशन, (प्रतिभा सम्मान) समारोहों में रूचि 1954 से आज तक। देश की स्वतंत्रता में भूमिगत स्वतंत्रता सैनिक की भूमिका, आर्य समाज के हिन्दी गौरक्षा सत्याग्रह में जेल यात्रा, विश्व हिन्दू परिषद के लिए। संकल्पानन्द पुरस्कार से गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र जी मोदी द्वारा दिनांक 20. 02. 2012 को टंकारा में सम्मानित, शाल, प्रतीक चिन्ह, 15,000/-रूपयों से सम्मानित।

अब उम्र भी 1926 जन्म से आज तक बहुत कुछ किया, बहुत कुछ न कर पाये, अब तो लौकिक छोड़ परलौकिक न जाने कब पिंजरा खाली करना पड़े। कहाँ और कैसे कहा जा सकता है। विचार मेरे अपने ही हैं। प्रस्तुति में जीवन में, जीवन रहते सभी के प्रति आभार के साथ जीवन के अंतिम चौराहे के रास्ते जाते हुए विदा, अलविदा!

संक्षिप्त समाचार

लाक्षागृह में मनेगा श्रावणी पर्व

बरनावा (उ०प्र०)। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी रक्षा बन्धन के शुभ अवसर पर 29 अगस्त 2015 को लाक्षागृह, बरनावा में सामवेद ब्रह्म-पारायण यज्ञ का आयोजन श्री गांधी धाम समिति द्वारा आयोजित किया जा रहा है। समिति ने सभी आर्यजनों को सगे संबन्धियों व मित्रों सहित सादर आमंत्रित किया है।

वैदिक प्रार्थनाएं

- **ओ३म् स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तर्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥**

यजुर्वेद- 25/19

हे इन्द्र, पूषा, अरिष्टनेमि व ब्रहस्पति हमारा कल्याण हो।

- **ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव॥**

हे सकल जगत के उत्पत्तिकर्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त, शुद्ध स्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुखों को दूर कर दीजिए, और जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं, वह हम सबको प्राप्त कराइए।

- **प्र तार्यायुः नवीयः।**

हे ईश्वर हमें उत्तरोत्तर समुन्नतिशील नवीनतर जीवन में अग्रसर कीजिए।

- **यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु॥**

यजु०।। अं० 32।। मं० 14।।

हे अग्नि! अर्थात् प्रकाश स्वरूप परमेश्वर, जिस बुद्धि की उपासना विद्वान, ज्ञान और योगी करते हैं, हमें भी वर्तमान समय में उस बुद्धि से युक्त कीजिए।

- **तेजाऽसि तेजोमयि धेहि। वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि। बलमसि बलं मयि धेहि। ओजोऽस्योजो मयि धेहि। मन्युरसि मन्यु मयि धेहि। सहोऽसि सहो मयि धेहि।**

यजु:0 ।। अं0 19 । मं0 9 ।।

हे ईश्वर! आप प्रकाश स्वरूप हैं, मुझमें भी प्रकाश स्थापित कीजिए। आप पराक्रमी हैं, मुझमें भी पराक्रम स्थापित कीजिए। आप बलवान हैं, मुझ में भी बल पैदा कीजिए। आप सामर्थ्यवान हैं, मुझे भी सामर्थ्य प्रदान कीजिए। आप दुष्टों और दुष्कर्म पर क्रोधकारी हैं, मुझे भी ऐसा ही बनाइए। आप निन्दा, स्तुति एक-सी सहने वाले हैं, मुझे भी ऐसा ही बनाइए।

- **असतो मा सद् गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृत गमयेति॥**

हे ईश्वर हमें असत् मार्ग से हटाकर सन्मार्ग दिखाइए। अज्ञान के अंधकार को हटाकर ज्ञान के सूर्य का प्रकाश दिखाइए। मृत्यु व रोग से हटाकर मोक्ष का अमृतपान कराइए।

"हे पापशोधक परमेश्वर! तू हमसे पाप को हटा दे, मन की मलिनता को हटा दे, दूसरे के प्रति की जाने वाली दृष्ट क्रिया और हिंसक वृत्ति को हटा दे, कुसंस्कार को हटा दे, बुरे विचार या बुरे स्वप्नों के मूल दुर्भाव को हटा दे। तू हमारे समस्त दोषों को दूर कर दे। पुनः पुनः हमें पापों से बचा। स्वतंत्रता के लिए हम निष्पाप हों। हे पाप निवारक! हमें समस्त पापों से बचा। हमें सब दुरितों और निन्दा से बचा। हमसे द्वेषभाव और कृपणता को दूर कर, हमारे समस्त दुरितों को दूर कर।"

इन्द्र प्रार्थना

- **यदिन्द्रं चित्रमेहनास्ति त्वादातमद्रिवः। राधस्तनो विदद्वस उभयाहस्त्या भर॥**

हे इन्द्र! तेरे द्वारा दिये जाने वाला धन बहुत ही पूज्य है। उस धन को तू हमें दे, और दोनों हाथों से दे।

- **यन्मन्यसे वरेण्यमिन्द्र द्युक्षं तदां भर। विद्याम् तस्य ते वयम् कूपारस्यदावने॥**

हे इन्द्र! जिस धन को तू तेजस्वी और ग्रहण करने योग्य समझता है, वह धन तू हमें दे। हम भी तेरे उस अपार धन के आश्रय में रहें।

- **मत्सि नो वस्य इष्टये।**

हे इन्द्र! हमें धनप्राप्ति के अवसर प्रदान कर।

- **वयं श्याम पतयो रयीणाम।**

हे ईश्वर! हम धनऐश्वर्यों के स्वामी हो जाएं।

- **अर्थो अन्नस्य हि लाभ भवतु तो गृहेषु नः।**

हमारे घरो में अन्न के ढेर लगे हुए हों।

- **गतं पापं गतं दुखम् गतं दरिद्रय मेवच्। आगता सुखसम्पत्ति पुर्न्याहम तब दर्शनात।**

- **कुर्वन्तु वो मंगलम्-**

सब मंगल करें।

- **कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम-**

सब मेरा प्रभात मंगलमय बनाएं

जीवन के दो आधार : आत्मविश्वास व प्रमात्म विश्वास

-श्री विश्वशांति टेकड़ीवाल परिवार

८६/९२, सीताराम पोद्दार मार्ग, मुम्बई, फोन : २२०६५५८८

भारतीय इतिहास का संकलन और पुनर्लेखन क्यों?

प्रो० वासुदेव शर्मा

१. भारतीय इतिहास में भारतीय दृष्टिकोण का अभाव-

(क) श्री के0 एम0 मुंशी के शब्दों में, ''इतिहास का प्रमुख उद्देश्य उन मूल्यों को खोजना और उनको स्पष्ट करना होना चाहिए, जिन्होंने किसी देश के निवासियों को युग-युगांतर में एक सामूहिक संकल्प विकसित करने के और फिर उसको अपने जीवन की बहुआयामी गतिविधियों के द्वारा अभिव्यक्त करने की प्रेरणा दी है। भारत का ऐसा इतिहास अभी लिखा जाना है।''

(ख) भगिनी निवेदिता के शब्दों में, ''भारत का, भारतीय प्रकाश के इतिहास में ही,अध्ययन किया जा सकता है। एक तथ्य पूर्ण, सत्यनिष्ठ अध्ययन द्वारा ही हम समझ सकते हैं कि वास्तव में देश क्या है?उसके विकास की दिशा क्या है और उसकी सुप्त शक्ति कैसे जाग्रत की जा सकती है?''

(ग) वस्तुनिष्ठ बने रहने के साथ-साथ एक ईमानदार इतिहासकार को भारत की प्राचीन धरोहरों के स्रोतों के साथ पूर्ण तादात्म्य रखने की आवश्यकता है। इतिहास-लेखन में हमारा दृष्टिकोण न केवल तर्क-आधारित होना चाहिए अपितु विश्व के लोग भारत की आत्मा की झलक उस तरह देख सकें जैसे भारतीय देखते हैं।

(घ) इतिहास-लेखन के चिन्तन एंव दृष्टिकोण की झलक इतिहासकार उपेन्द्र सिंह, हिमांशु प्रभारे, नैन जोत लाहिरी की कृतियों में दिखाई पड़ती है। आर. सी. मजूमदार की कृति ''दी हिस्ट्री ऑन कल्चर दी इण्डियन पीपुल'' के अनेक खण्ड भी इतिहास लेखन के उद्देश्य के निकट दिखाई पड़ते हैं। भारत के इतिहास लेखन में मार्क्सवादी दृष्टिकोण तथा राष्ट्रवादी दृष्टिकोण इन दोनो की अतिवादिता को छोड़ना होगा।

(ड) भारतीय इतिहास में मार्क्सवादी चिन्तन की छाया-द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के कारण सर्वहारा और वर्ग संघर्ष की स्थिति तथा धर्म को अभारतीय दृष्टिकोण से देखने की प्रवृति तथा मजदूर और पूंजीपति के रूप में आर्थिक व्यवस्था और शोषण का चिंतन। डी. डी. कौशाम्बी की कृति ''इन्ट्रोडक्शन टू दी स्टडी ऑफ इण्डियन हिस्ट्री'' (1956) से ऐसा लगता है। इस विचार के इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास को केवल विदेशी आक्रान्ताओं के रूप में देखा है जिन्होंने अपने राज्य स्थापित किये। अंग्रेजों के द्वारा साम्राज्य की स्थापना तक पराजय का इतिहास ही भारत का इतिहास है, यह स्पष्ट किया गया। मार्क्सवादी चिंतन भौतिकवादी, सामाजिक तथा आर्थिक विदेशी चिंतन पर आधारित होने के कारण वैदिक धर्म भी पुरातन सर्वात्मवाद बन जाता हैऔर गीता सामन्तवाद को बढ़ावा देती है। परिणामत: भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मान्यताएं चिंतन और मनुष्यों के गुण तथा कर्म पर आधारित वर्णाश्रम व्यवस्था अनुचित दिखाई पड़ती है। वे इस सत्य को भूल गए कि प्रत्येक आक्रान्ता का विरोध पूर्ण शक्ति के साथ हुआ तथा भारत के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक वैशिष्टय ने विश्व के बहुत बड़े भूभाग को आच्छादित और प्रभावित किया, जिसके चिन्ह विदेशों में आज तक विद्यमान हैं। इसी वैशिष्ट्य ने ही विविधता में एकता को जन्म दिया। इन्हीं में से भारत के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का विकास हुआ है जो भारतीय अस्मिता का आधार भी है और सैक्युलरिज्म की भावना का निवेश भी। अत: भारतीय इतिहास के साथ न्याय नहीं हुआ।

२. इतिहास के वर्गीकरण में भ्रम के दर्शन-

(क) इतिहास का विभाजन वैदिक काल, बौद्ध, हिन्दु, मुस्लिम तथा अंग्रेजी कालों के रूप में किया गया। विचारणीय विषय यह है कि इतिहास की पुस्तकों में वैदिक बौद्ध, हिन्दु काल को कितना समय दिया गया है? यदि धर्म के आधार पर युगों का विभाजन किया गया तो अंग्रेजी काल को ईसाई युग क्यों नहीं लिखा गया? यद्यपि बाद में मुस्लिम काल को मध्ययुगीन नाम दिया गया किन्तु क्या ऐसा कोई दृष्टान्त या घटना है कि पूरे भारतवर्ष में जहां भी मुस्लिम राज्य की स्थापना हुई, उसके विरूद्ध युद्ध या संघर्ष न हुआ हो। मध्यकाल नाम से एक नई भ्रान्ति ने जन्म लिया कि यह युग यूरोप के उस मध्यकाल के ही समान है जो बर्बर और सामन्तवादी या अधिनायकवादी अंधकार से भरा हुआ युग था। जबकि भारतीय समाज की प्रकृति ऐसी नहीं थी। इस सत्य को भ्रम के खांचें में जानबूझ का डाला गया कि मध्य युगीन यूरोप के सैमेटिक धर्म की मान्यताओं जैसा यहां भी था जबकि अत्यन्त प्राचीन काल से ही धर्म सम्बन्धी वैचारिक स्वातन्त्रय, तर्क और वाद-विवाद सभी प्रकार से मुक्त था। भारत में कभी भी तार्किक विवेचना और विचारों के प्रसार पर न तो प्रतिबन्ध रहा और न विरोधी को दण्ड देने का विधान रहा।

(ख) अति प्राचीन काल से ही खान-पान, रहन-सहन, वेशभूषा तथा भाषाओं में विभिन्नता होते हुए भी आध्यात्मिक दृष्टि के कारण भारत में सांस्कृतिक एकता बनी रही। यह सांस्कृतिक प्रवाह सारे समाज में धर्म चेतना बनकर व्याप्त रहा। विभिन्न मत, पन्थ सम्प्रदाय और विभिन्न जातियॉं होते हुए भी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के रूप में निरन्तर बना रहा। तीर्थों पर लगने वाले मेलों में स्वप्रेरणा से एकत्र होने वाले भारतीय समाज में अनेकरूपा विविधता होते हुए भी आध्यात्मिक चेतना तथा धार्मिक वृत्ति के कारण जिस एकता के दर्शन होते हैं, उसी ने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का रूप ग्रहण किया। इसी राष्ट्रवाद का प्रवाह वैदिक, पौराणिक गणतंत्रात्मक युग में होता हुआ विवेकानन्द और रामतीर्थ तथा प्रभुपाद भक्तिवेदान्त संत स्वामी के युग तक अक्षुण्ण धारा के रूप में स्पष्ट दिखाई देता है। भारतीय दृष्टि के अभाव में भारतीय इतिहास में इस सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को भयंकर और नकारात्मक रूप में चित्रित किया गया। भारतीय अस्मिता के इस स्वाभाविक आधार को उपेक्षित भी किया गया। भारतीय इतिहास (जो विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाता रहा) को पढ़ने पर ऐसा लगता है कि मार्क्सवादी चिंतन और तर्क भारतीय मनीषा की विलक्षण बौद्धिकता के पीछे की आध्यामिकता को समझ ही नहीं पाया।

३. भारतीय जिजीविषा का उल्लेख नहीं-

(क) भारतीय समाज की जिजीविषा और विजिगीषा सदैव अमृत्य रही है क्योंकि हमने भाग्यवादिता के स्थान पर कर्मवाद का प्रश्रय दिया है। प्राचीन इतिहास साक्षी है कि यह अजस्र ऊर्जा किसी काल खण्ड में मन्द भले ही पड़ गई होगी, किन्तु मिटी नहीं। हमारा प्राचीन वाड्.मय हमें अपनी इस विजगीषु वृत्ति का स्मरण कराता है। आसुरी शक्ति पर दैवी शक्ति की विजय आज भी विजयदशमी, होली, नवरात्र, दीपावली और कृष्ण जन्माष्टमी के रूप में मनाते है। राजसूय और अश्वमेघ यज्ञ इसके प्राचीन प्रमाण हैं। इतिहासकारों ने हमारी आत्मा की अमरता और पुनर्जन्म की आस्था के वैज्ञानिक आधार को वैयक्तिक धारणा मानकर इतिहास से निष्कासित कर दिया। यह आस्था भारतीय समाज के जीवन-दर्शन और कर्मचेतना से जुड़ी है-इस तथ्य को भुला दिया गया। इसी कारण युद्धों में भी नैतिकता हँसते-हँसते प्राण त्याग, नारी-गौरव की रक्षा, विजयी होने पर भी क्षमा तथा हर परिस्थिति में शरणागत की रक्षा की शतश: घटनाएँ इतिहास की सामग्री नहीं बन सकीं। अपितु इसके विपरीत इस्लाम और ईसाईयत के अंधकार पूर्ण लेख-जोख को बड़े उदार रूपों में चित्रित किया गया। अपनी मौलिक पहचान बचाए रखने के लिए इन विदेशी आक्रमणकारियों से सतत् संघर्ष करते हुए 1857 ई0 तक जो सामाजिक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संरक्षण किया गया, इतिहास में उल्लेख करने योग्य ही नहीं समझा गया।

(ख) राष्ट्रीय गौरव के उन्मेष से शून्य- इतिहास का यह कर्तव्य है कि राष्ट्रीय गौव का जागरण करें, उस दृष्टि से क्या अशोक, समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त मौर्य, हर्षवर्धन, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, महाराजा सुहेल देव, चिमाजी अप्पा, बप्पा रावल, महाराजा रणजीत सिंह, बन्दा बैरागी, हूणों पर जय पाने वाले स्कन्दगुप्त तथा भानुगुप्त, लतितादिब्य मुक्त पीड़, शिवाजी, राणाप्रताप, छत्रसाल, हरिसिंह नलवा, गुरू गोविन्द सिंह आदि न जाने कितने वीर योद्धा तथा अप्रतिम बलशाली वीर इस धरती पर हुए जिन्होंने पराक्रम और शौर्य का अद्भुत इतिहास रचा, की गौरव गाथाएँ इतिहास में मिलती हैं क्या? आखिर क्यों नहीं। इनके महान गौरवशाली चरित्र, त्याग राष्ट्र रक्षा और धर्म रक्षा का उल्लेख भारतीय इतिहास में क्यों नहीं किया गया? 600 वर्ष पूर्व वर्तमान ईरान के सम्राट दरियाबाहु ने वर्तमान विलोचिस्तान पर आक्रमण किया था। युद्ध में दरियाबाहु मारा गया और शेष सात सैनिक प्राण बचाकर अपने देश लौटे थे। उसके बाद किसी बाहरी शत्रु ने 325 वर्ष तक भारत की ओर आँख उठाकर नहीं देखा। 326 ई. पूर्व सिकन्दर का आक्रमण हुआ और वह भी वेवलीनो में भारतीय वीर के तीर से घायल होकर अपने प्राण गँवा बैठा। उसके उत्तराधिकारी सैल्युकस को अपनी बेटी ही चन्द्रगुप्त को देनी पड़ी। ऐसे सैकड़ों गौरवशाली अध्यायों से शून्य भारत का इतिहास हमें आज भी पढ़ाया जा रहा है। तथ्यों एवं प्रमाणों के आधार पर ऐसे भारतीय इतिहास का संकलन तथा पुनर्लेखन वर्तमान और भावी पीढ़ी के लिये हमारा कर्तव्य और दायित्व है।

ग्रीष्म वर्णन

वेदप्रकाश शास्त्री 'व्याकरणाचार्य'

दोहा

व्याकुल है त्रिभुवन सकल, पाकर आतप ताप।
सुधा वृष्टि करके प्रभो! हरो ग्रीष्म सन्ताप।।

कवित्त

बसन्त की बहार का तो तत्क्षण अन्त हुआ
ग्रीष्म ताप से ताड़ित भागी हरियाली है।
शुष्क हुए फूल सब, खुश्क हुए वृक्ष मूल,
पुष्प से विहीन हुई, झूल रही डाली है।
सुगन्ध समीर नहीं, शीतल है नीर नहीं,
गौ नीचे क्षीर नहीं, आपदा निराली है।
मति की विहीनता का दृश्य यहां देखो 'चन्द्र'
हाय हरे बाग में ही आग देत माली है।

सवैया

जित वायु बहे सुखदायक थी, उत आज हुई प्रतिकूल वही।
शुभ शान्त खमण्डल था तब जो, उड़ आज वहीं अति धूल रही।।
हंसते खिलते प्रिय पुष्प जहां, जब दीख रहे अरि शूल वहीं।
नभ तो तपता अति तेज अहो, हुई सूरज के अनुकूल मही।।

कवित्त

दैत्यराज आदित्य के त्रास से त्रासित हुई
आवत है उषा भागी भगिनी प्रभात की।
विराट के ही राज में ग्रीष्म वनवास में
द्रोपदी है त्रास में मारी कीचक लात की।
मच रहा चहुं ओर त्राहि त्राहि का है शोर
विपद है अति घोर हाय दिन रात की।
ग्रीष्म की गरमी में पार न बसाती 'चन्द्र'
आती है याद गत वसन्त बरसात की।।

सवैया

धर रूप भयंकर ग्रीषम ने, सब नष्ट करी सुषमा जग की।
तप तेज दिवाकर ने अब, मन्द करी गति, तीव्र नदी नद की।।
नभ में अविराम विभाकर चाल चले गजराज महा मद की।
लघु देख अरे किमि छीन लई द्युति 'चन्द' सदा सुखदायक की।।

कवित्त

संकट अनेक छाये, विकट ये दिन आये
आते ही निकट हाय इस ग्रीष्म मास के।
पक्षी अकुलाय रहे, वृक्ष मुरझाय गये
दिये हैं सुखाय सभी ताल आस पास के।
पशुओं को चारा नहीं, दीनों का सहारा नही
दरशन होते नहीं कहीं हरी घास के।
रात प्रात सायं की विपद तो कही ना जात
दुर्दिन ये बीतत हैं सम अर्ध-मास के।।

सवैया

हरे बन बाग उजाड़ दिये अब मोर बसें किन बागन में।
भरे सब ताल सुखाय दिये बक हंस चरें किन कानन में।।
संहार करे जिस ओर चले, विष घोर भरा इस नागन में।
अरे अब होली फुंके रब की, सब की फुंकती दिन फागन में।।

-नांगल सोती, जिला-बिजनौर (उ.प्र.), मोबा. : 9319958003

ऋग्वेद के नासदीय-सूक्त का अध्ययन

वेदों के नासदीय-सूक्त में सिद्धान्त रूप में है सृष्टि की प्रलय व उत्पत्ति का वर्णन

मनमोहन कुमार आर्य

ऋग्वेद के मण्डल १० सूक्त १२९ को नासदीय-सूक्त कहते हैं। इस सूक्त में सृष्टि की उत्पत्ति होने से पूर्व आकाश की अन्धकाररूप स्थिति का वर्णन है। परमात्मा के सम्मुख सृष्टि का उपादान कारण द्रव्यभाव से वर्तमान था, आत्माएं भी साधारण और मुक्त अवस्था की बहुत थीं आदि ऐसे अनेक विषयों का वर्णन इस सूक्त में है। नासदीय का अर्थ है कि सृष्टि की रचना से पूर्व जगत् की स्थिति शून्यमय नितान्त अभावरूप नहीं थी, कुछ अवश्य था परन्तु जो था वह अप्रकट व प्रकाशित था। सृष्टि की इस कारण रूप अवस्था का दिग्दर्शन कराने के लिए इस संसार के स्वामी परमेश्वर ने अपनी अनादि व नित्य प्रजा जीवात्माओं-मनुष्यों को इस सूक्त में यथार्थ ज्ञान दिया है। सूक्त में कुल ७ मन्त्र हैं जिन्हें हम स्वाध्यायार्थ एवं ज्ञानार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं। सृष्टि की प्रलय अवस्था का इन मन्त्रों में जैसा वर्णन है वैसा किसी अन्य धार्मिक व विज्ञान के ग्रन्थ में उपलब्ध नहीं होता। इसलिए नहीं हो सकता क्योंकि प्रलय अवस्था का एकमात्र साक्षी तो केवल और केवल परमात्मा ही होता है। वह ही जो कहेगा या बतायेगा, वही सत्य व स्वीकार्य होगा। उसने इसका वर्णन ऋग्वेद में किया है, जो विचारणीय है। हमें लगता है कि इस वर्णन से वेदों के ईश्वरीय ज्ञान होने की पुष्टि भी होती है। आईये, पहले सातों मन्त्रों पर दृष्टि डालते हैं। ओ म् नासदासीन्नो सदासीत्तदानीं नासीद्रजो नो व्योमा परो यत्। किमावरीवः कुह कस्य शर्मन्नम्भः किमासीद्गहनं गभीरम्।।१।। न मृत्युरासीदमृतं न तर्हि न रांया अन्ह आसीत्प्रकेतः। आनीदवातं स्वधया तदेकं तस्माद्धान्यन्न परः किं चनास।।२।। तम आसीत्तमसा गूळहमग्रेऽप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम्। तुच्छय्येनाभ्वपिहितं यदासीत्तपसस्तन्महिनाजायतैकम्।।३।। कामस्तदग्रे समवर्तताधि मनसो रेतः प्रथमं यदासीत्। सतो बन्धुमसति निरविन्दन् हृदि प्रतीष्या कवयो मनीषा।।४।। तिर चीनो विततो रश्मिरेषामधः स्विदासी दुपरि स्विदासी त्। रेतोधा आसन्महिमान आसन्त्स्वधा अवस्तात्प्रयतिः परस्तात्।।५।। को अद्धा वेद क इह प्रवोचत्कुत आजाता कुत इयं विसृष्टिः। अर्वाग्देवा अस्य विसर्जनेनाथा को वेद यत आबभूव।।६।। इयं विसृष्टिर्यत आबभूव यदि वा दधे यदि वा न। यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन्त्सो अंग वेद यदि वा न वेद।।७।।

ऋग्वेद के सम्पूर्ण दसवें मण्डल पर स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक जी द्वारा किया गया संस्कृत-हिन्दी पद-अर्थ व भावार्थ उपलब्ध है। महर्षि दयानन्द ऋग्वेद का पूरा भाष्य नहीं सके जिसमें दसवें मण्डल का भाष्य भी सम्मिलित है। वह ऋग्वेद के मण्डल ८ सूक्त ६१ के दूसरे मन्त्र तक का ही भाष्य कर सके। यहां तक भाष्य करने के बाद ही उन्हें कालकूट विष दे दिया गया जिससे उनकी मृत्यु हो गई थी। उन्होंने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में सृष्टिविद्याविषय अध्याय में सप्तम् व तृतीय मन्त्र का क्रम से अर्थ प्रस्तुत किया है। उन्होंने लिखा था कि वह सूक्त के २ से ६ तक मन्त्रों का भाष्य वेदभाष्य में करेंगे जिसे वह आरम्भ करने वाले थे। परन्तु बीच में ही कुछ स्वार्थी व अधर्मी लोगों ने विषपान कराकर व उनकी समुचित चिकित्सा न होने से उनका प्राणान्त हो गया। महाभारत युद्ध से जो आर्यों का अभाग्योदय हुआ था उसकी महर्षि दयानन्द को विष दिये जाने और उससे मृत्यु हो जाने से एक बार पुनः पुनरावृत्ति हुई। सत्यार्थप्रकाश भी महर्षि दयानन्द का सर्वप्रसिद्ध ग्रन्थ है। इसके अष्टम् समुल्लास में भी स्वामी जी नासदीय-सूक्त के मन्त्र ३ व ७ का भावानुवाद दिया है। महर्षि के इन भावार्थों को हम ब्रह्ममुनि जी के सभी मन्त्रों के भावार्थों के पश्चात प्रस्तुत कर रहे हैं। स्वामी ब्रह्मुनि जी के दसवें मण्डल से उपर्युक्त सातों मन्त्रों के भावार्थ प्रस्तुत हैं: सृष्टि से पूर्व न शून्यमात्र अत्यन्त अभाव था परन्तु वह जो था उसका प्रकटरूप भी न था, न रंजनात्मक कणमय गगन था न परवर्ती सीमावर्ती आवर्त्त घेरा था। जब आवरणीय पदार्थ या जगत् न था तो आवर्त्त भी क्या हो वह भी न था। कहां फिर सुख शरण किसके लिये हो एवं भोग्य भोक्ता की वर्तमानता भी न थी, सूक्ष्म जल परमाणु प्रवाह या परमाणु समुद्र भी न था, कहने योग्य कुछ न था पर था कुछ, अप्रकटरूप में था।।१।। सृष्टि से पूर्व मृत्यु नहीं था क्योंकि मरने योग्य कोई था नहीं, तो मृत्यु कैसे हो? मृत्यु के अभाव में अमृत हो सो अमृत भी नहीं क्योंकि मृत्यु की अपेक्षा से अमृत की कल्पना होती है। अतः अमृत के होने की कल्पना भी नहीं, दिन रात्रि का पूर्व रूप भी न था क्योंकि सृष्टि होने पर दिन रात्रि का व्यवहार होता है, हां एक तत्व वायु द्वारा जीवन लेनेवाला नहीं किन्तु स्व धारणशक्ति से स्व सत्तारूप जीवन धारण करता हुआ जीता जागता ब्रह्म था उससे अतिरिक्त और कुछ न था।।२।। सृष्टि से पूर्व अन्धकार से आच्छादित अन्धकारमय था, जल समान अवयवरहित न जानने योग्य ''आभु'' नाम से परमात्मा के सम्मुख तुच्छ रूप में एकदेशी अव्यक्त प्रकृति रूप उपादान कारण था जिससे सृष्टि आविर्भूत होती है, उस (ईश्वर) के ज्ञानमय तप से प्रथम महत्तत्व उत्पन्न हुआ।।३।। (यह महत्तत्व पदार्थ उपादान कारण रूप प्रकृति का पहला विकार है जो ईश्वर की प्रेरणा रूपी ईक्षण क्रिया से हुआ व बना-लेखक)। आरम्भ सृष्टि में भोगों के लिए कामभाव वर्तमान होता है जो मानव की बीज शक्तिरूप में प्रकट होता है, क्रान्तदर्शी विद्वान आत्मा के अन्दर शरीर का बांधने वाला है उसे समझ कर वैराग्य को प्राप्त होते हैं।।४।। भोगों की कामनारूप मानवबीजशक्ति को धारण करने वाले आत्मा सृष्टि से पहले थे और वे असंख्यात थे। इनके पूर्व कर्म कृत संस्कार डोरी या लगाम के समान शरीर में खींच कर लाता है व निकृष्टयोनि संबन्धी और उत्कृष्टयोनि संबन्धी होता है। शरीर के अवर भाग में जन्म है और परभाग में प्रयाण मृत्यु है।।५।। यह विविध सृष्टि किस निमित्त कारण से और किस उपादान कारण से उत्पन्न होती है इस बात को कोई विरला विद्वान ही यथार्थ रूप में जान सकता है क्योंकि सभी विद्वान सृष्टि उत्पन्न होने के प चात् होते हैं--अर्थात् कोई तत्ववेत्ता योगी ही उसको समझ सकता है और कह सकता है।।६।। यह विविध सृष्टि जिस उपादान कारण से उत्पन्न होती है उस उपादान कारण अव्यक्त प्रकृति का यह परमात्मा स्वामी--अध्यक्ष है, वह उससे सृष्टि को उत्पन्न करता है और उसका संहार भी करता है, प्रकृति को जब लक्ष्य करता है तो उसे सृष्टि के रूप में ले आता है, नहीं लक्ष्य करता है तो प्रलय बनी रहती है, इस प्रकार सृष्टि और प्रलय परमात्मा के अधीन है।।७।। महर्षि दयानन्द जी का ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में मन्त्र संख्या १ व ७ का भाष्यः

जब यह कार्य सृष्टि उत्पन्न नहीं हुई थी, तब एक सर्वशक्तिमान् परमेश्वर और दूसरा जगत् का कारण अर्थात् जगत् बनाने की सामग्री विराजमान थी। उस समय असत् वा शून्य नाम आकाश अर्थात् जो नेत्रों से देखने में नहीं आता, सो भी नहीं था क्योंकि उस समय उसका व्यवहार नहीं था। उस काल में सत् अर्थात् सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण मिला के जो प्रधान कहलाता है, वह भी नहीं था। उस समय परमाणु भी नहीं थे तथा विराट् अर्थात् जो सब स्थूल जगत् के निवास का स्थान है सो भी नहीं था। जो यह वर्तमान जगत् है, वह भी अनन्त शुद्ध ब्रह्म को नहीं ढाक सकता, और उससे अधिक वा अथाह भी नहीं हो सकता और न वह कभी गहरा वा उथला हो सकता है। इससे क्या जाना जाता है कि परमे वर अनन्त है और जो यह उसका बनाया जगत् है, सो ईश्वर की अपेक्षा से कुछी भी नहीं है।।१।। जब जगत् नहीं था, तब मृत्यु भी नहीं था, क्योंकि जब स्थूल जगत् संयोग से उत्पन्न होके वर्त्तमान हो, पुनः उसका और शरीर आदि का वियोग हो तब मृत्यु कहावे सो शरीर आदि पदार्थ उत्पन्न ही नहीं हुए थे। इसके आगे महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि 'न मृत्यु.' इत्यादि पांच मन्त्र सुगमार्थ हैं, इसलिये इनकी व्याख्या भी यहां नहीं करते, किन्तु वेदभाष्य में करेंगे। (२-६) जिस परमेश्वर के रचने से जो यह नाना प्रकार का जगत् उत्पन्न हुआ है, वही इस जगत् को धारण करता, नाश करता और मालिक भी है। हे मित्र लोगों ! जो मनुष्य उस परमेश्वर को अपनी बुद्धि से जानता है, वही परमेश्वर को प्राप्त होता है और जो उसको नहीं जानता वही दुःख में पड़ता है। जो आकाश के समान व्यापक है, उसी ईश्वर में सब जगत् निवास करता है। और जब प्रलय होता है, तब भी सब जगत् कारण रूप होके ईश्वर के सामर्थ्य में रहता है, और फिर उसी से ही उत्पन्न होता है।।७।। सत्यार्थप्रकाश में मन्त्र ७ व ३ का भावार्थः हे मनुष्यों! जिस से यह विविध सृष्टि प्रकाशित हुई है, जो धारण और प्रलयकर्ता है, जो इस जगत् का स्वामी, जिस व्यापक में यह सब जगत् उत्पत्ति-स्थिति-प्रलय को प्राप्त होता है, सो परमात्मा है, उस को तू जान और दूसरे को सृष्टिकर्ता मत मान।।७।। यह सब जगत सृष्टि के पहिले अन्धकार से आवृत्त रात्रिरूप में जानने के अयोग्य, आकाशरूप सब जगत् तथा तुच्छ अर्थात् अनन्त परमेश्वर के सम्मुख एकदेशी, आच्छादित था। पश्चात् परमेश्वर ने अपने सामर्थ्य से, कारणरूप से कार्यरूप कर दिया।।३।। इस सूक्त में प्रलयावस्था के वर्णन के साथ सृष्टि की उत्पत्ति का उपादान कारण प्रकृति व निमित्त कारण ईश्वर को बताया गया है। ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ है। उसने इस सृष्टि से पूर्व भी असंख्य बार सृष्टि को उत्पन्न व उत्पन्न सृष्टि की प्रलय की है। इसका उसे अनादि काल से ज्ञान व अनुभव है। सृष्टि का प्रयोजन भी वेदों ने असंख्यात जीवों के पूर्व किये हुए कर्मों के भोग प्रदान करने को बताया है। सृष्टि की प्रलय व ईश्वर द्वारा इसकी उत्पत्ति होना सत्य व यथार्थ सिद्धान्त है। यह पूर्णतया वैज्ञानिक है, भले हि वैज्ञानिक इसे किसी कारण से स्वीकार करें या न करें। यह निश्चित है कि सृष्टि की रचना स्वयं नहीं हो सकती और न हि प्रलय भी स्वयं हो सकती है। जीव व प्रकृति जड़ तत्वों से निर्मित होकर नहीं बने हैं अपितु यह दोनों अनादि, नित्य, अजन्मा व अमर हैं और ऐसा ही ईश्वर भी सच्चिदानन्द, अनादि, अजन्मा, नित्य, अमर, सर्वव्यापक, निराकार, सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान आदि गुणों से पूर्ण है। वेदों के इन्हीं सिद्धान्तों का परवर्ती ब्राह्मण ग्रन्थों, दर्शन व उपनिषद साहित्य आदि में समर्थन व विस्तार हुआ है। हम आशा करते हैं कि इस लेख के द्वारा पाठक सृष्टि की रचना व प्रलय अवस्था से सम्बन्धित वैदिक मन्तव्यों से परिचित होंगे व इसे वैज्ञानिक, सत्य, यथार्थ, तकपूर्ण व बुद्धिसंगत पायेंगे। वेदों में अन्यत्र भी सृष्टि रचना के वर्णन प्राप्त होते हैं अतः वेदों का समग्र अध्ययन, चिन्तन व मनन सभी जिज्ञासुओं व अध्येताओं को करना चाहिये। यही अर्थात् वेदों का अध्ययन सभी मनुष्यों का पहला व अन्तिम धर्म व कर्तव्य भी है। वेदों का अध्ययन-अध्यापन, श्रवण-मनन व प्रचार न करने वाला मनुष्य वस्तुतः नास्तिक होता है। उसे हम एक प्रकार से कृतघ्न भी इस आधार पर कह सकते हैं जिस जगदीश्वर ने हम जीवों को मनुष्य रूपी शरीर दिया व सुख सुविधाओं के नाना साधन प्रदान किये है उसके ज्ञान वेदों का अध्ययन कर उसको व स्वयं को सत्य व यथार्थ रूप में न जानना कृतघ्नता व नास्तिकता ही है।

पता : १९६ चुक्खूवाला-२
देहरादून-२४८००१
फोन : ०९४१२९८५१२१

अति विशेष सूचना

अपने सभी लेखकों से हम विनम्र निवेदन करते हैं कि हमारे पास प्रतिदिन ढेर सारे लेख आते हैं। सभी कुछ न कुछ विशिष्ट ज्ञान से ओतप्रोत होते हैं, किन्तु सभी का प्रकाशन कर पाना संभव नहीं हो पाता। जबकि हम अच्छी तरह जानते हैं कि लेख लिखने में कितना श्रम लगता है। इसलिए हमने एक विशेष योजना प्रारम्भ की है कि लेखों को पुस्तकाकार रूप में निरंतर छापते रहें। वैसे भी पुस्तक में छपने की अपनी मर्यादा और महत्व दोनों होते हैं। इसके लिए लेखक महोदय अल्प आर्थिक सहयोग (मात्र रु0 250/- अथवा अधिक) करके इस प्रकाशन यज्ञ में सहयोग करेंगे, ऐसी हमें आशा है। सहयोग हेतु साधुवाद।

नोट :- लेखकों द्वारा प्रदत्त सहयोग राशि के बराबर मूल्य की पुस्तकें उन्हें निःशुल्क दी जाएंगी।

-सम्पादक

उत्तराखण्ड में वेद प्रचार और इसकी प्रमुख ऐतिहासिक आर्य संस्थायें

विश्व प्रसिद्ध हैं- गुरुकुल कांगड़ी विवि., गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर, नारायण स्वामी आश्रम, रामगढ़ तल्ला, वैदिक मोहन आश्रम, हरिद्वार, वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, वैदिक तपोवन, कन्या गुरुकुल, देहरादून सहित हरिद्वार, देहरादून, नैनीताल व अल्मोड़ा आदि के ऐतिहासिक आर्यसमाज।

ज्ञान प्रकाश पाण्डेय

उत्तराखण्ड भारत का एक प्रमुख सीमान्त राज्य है जिसकी स्थापना 9 नवम्बर, 2000 को हुई। राज्य की स्थापना से पूर्व यह उत्तर प्रदेश राज्य का अंग होता था। इसका पूर्व नाम सयुंक्त प्रान्त था। उत्तराखण्ड में वेद प्रचार का श्रेय महर्षि दयानन्द व उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज के निष्ठावन विद्वानों व प्रचारकों को है। अभी महर्षि दयानन्द धर्म व समाज विषयक सत्य नियमों की खोज कर रहे थे तो उन्होंने उत्तराखण्ड को अपने अभिलाषित उद्देश्य संसार व जीवन का यथार्थ स्वरूप की सफलता में उपयोगी जानकर यहां के पर्वतीय धर्मस्थलों में योगियों व ज्ञानियों की खोज की थी जो मानव जीवन की सभी आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक व विविध शंकाओं व प्रश्नों का समाधान कर सकें। वह उत्तराखण्ड के पर्वतों व इतर स्थानों में स्थित सभी प्रमुख निर्जन स्थानों व पर्वतों के शिखर एवं गुफाओं में गये और वहां योगियों व ज्ञानियों की खोज की परन्तु उन्हें बहुत अधिक सफलता प्राप्त नहीं हुई। यहां उन्होंने पुस्तकालयों में सत्य ग्रन्थों की खोज भी की और यहां जो ग्रन्थ उपलब्ध थे, उन पर अध्ययनात्मक दृष्टि डाली। समस्त उत्तराखण्ड की आध्यात्मिक व धार्मिक दृष्टि से गहन छानबीन कर वह अन्य प्रदेशों में चले गये और सन् 1860-63 के वर्षों में मथुरा में दण्डी गुरू प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती से आर्ष व्याकरण सहित आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन किया व उनके महत्व को जाना। देश व विश्व से अविद्या व आध्यात्मिक अन्धकार को दूर कर सद्विद्या व सद्ज्ञान का प्रकाश करने के लिए उन्होंने सन् 1863 में ही वैदिक मान्यताओं का प्रचार प्रसार आरम्भ कर दिया था। इसी क्रम में सन् 1879 के कुम्भ के मेले के अवसर पर वह हरिद्वार आये थे और यहां पाखण्ड खण्डिनी पताका गाड़कर वेदोपदेश व अविद्याजन्य धार्मिक अन्धविश्वासों कुरीतियों का खण्डन किया था।

देहरादून उत्तराखण्ड का प्रमुख नगर रहा है और सम्प्रति राजधानी है। 10 अप्रैल, 1875 को मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना के बाद महर्षि को देश भर से वेद प्रचार सहित अविद्या, अन्धविश्वास, पाखण्ड व कुरीतियों के खण्डन के लिए निमन्त्रण मिलने लगे थे। देहरादून से भी उनको श्री पं. कृपाराम स्वामी जी ने निमन्त्रण भेजा गया था। महर्षि पहली बार 14 अप्रैल, सन् 1879 को देहरादून पहुंचे और इतिहास में पहली बार देहरादून के लोग वेदों के सत्य स्वरूप, ईश्वर तथा जीवात्मा विषयक सत्य वैदिक ज्ञान से परिचित हुए। महर्षि दयानन्द का कार्यक्षेत्र यद्यपि समस्त विश्व था परन्तु देश भर में गहन अविद्यान्धकार व अन्धविश्वासों के कारण उन्हें देश भर में भ्रमण करना पड़ा, अल्पकाल में जीवन के अवसान के कारण वह विदेशों में प्रचार नहीं कर पाये। वैदिक मान्यताओं व सिद्धान्तों के प्रचार के साथ-साथ वह ग्रन्थ लेखन, वेदभाष्य, उपदेश व प्रवचन, शास्त्रार्थ, वार्तालाप, शंका समाधान, गोरक्षा व हिन्दी प्रचार अभियान जैसे अनेक कार्यों में व्यस्त रहे। इस कारण सभी स्थानों पर जाकर उनका प्रचार करना सम्भव नहीं था। उन दिनों पंजाब की हिन्दू जनता धार्मिक दृष्टि से कुछ अधिक जागरूक थी, अत: उनका वहां पर्याप्त समय लगा और सफलता भी मिली। वह समझते थे कि भारत की स्वतन्त्र रियासतों में वेद प्रचार करने से अधिक अच्छे परिणाम सामने आ सकते हैं। अत: उन्होंने अनेक रियासतों में जाकर वैदिक सद्धर्म का प्रचार-प्रसार किया। विरोधियों के षड़यन्त्रों के कारण अल्पकाल में ही उनकी मृत्यु हो गई जिससे प्रचार का भार उनके अनुयायियों पर आ पड़ा।

महर्षि दयानन्द की पहली पीढ़ी के प्रमुख अनुयायियों में पं. गुरूदत्त विद्यार्थी, स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, महात्मा हंसराज, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती, महात्मा नारायण स्वामी, लाला लाजपत राय आदि का प्रमुख स्थान था जिन्होंने महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा को प्रभावशाली रूप से आगे बढ़ाया। **स्वामी श्रद्धानन्द व स्वामी दर्शनानन्द ने हरिद्वार व ज्वालापुर में गुरूकुल कांगड़ी तथा गुरूकुल महाविद्यालय खोलकर वैदिक विद्वान बनाने व दिगदिगन्त वेद प्रचार का महनीय कार्य किया।** आज आर्य समाज का जो विश्वस्तरीय विराट स्वरूप है, उसमें इन दो संस्थाओं को महत्वपूर्ण योगदान है। इन दो गुरूकुलों ने सारे देश ही नहीं अपितु विश्व को भी वैदिक ज्ञान से आलोकित किया है। पं. लेखराम जी भी महर्षि दयानन्द जी के जीवन की खोज करते हुए देहरादून, हरिद्वार सहित उत्तराखण्ड के अन्य स्थानों पर पधारे थे और उनसे जुड़ी घटनाओं का संग्रह कर लौट गये थे जो उनके द्वारा संग्रहित जीवन चरित का अंग बनी हैं। महात्मा हंसराज जी भी हरिद्वार के पाखण्ड खण्डिनी पताका स्थल मोहन राकेश आश्रम से जुड़े रहे और उन्होंने यहां पर्याप्त समय व्यतीत किया। लाला लाजपतराय जी ने भी देहरादून आदि स्थानों को अपनी चरण रज से पवित्र किया था। महात्मा नारायण स्वामी जी का उत्तराखण्ड से विशेष सम्बन्ध रहा है। उत्तराखण्ड को एकान्त सेवन का सर्वोत्तम स्थान जानकर उन्होंने यहां कुमाऊ मण्डल के रामगढ़ तल्ला स्थान में अपना नारायण आश्रम बनाया था और यहां रहकर साधना, शिक्षा, धर्म प्रचार, समाज सुधार आदि अनेक कार्य किये। **नारायण आश्रम के अतिरिक्त आपने हरिद्वार के निकट ज्वालापुर में आर्य वानप्रस्थ आश्रम की स्थापना भी की** जो देश भर की अपने प्रकार की अनूठी संस्था है और आज भी सक्रिय होने के साथ सफलतापूर्वक चल रही है। इस लेख में हम महात्मा नारायण स्वामी जी के कार्यों की किंचित विस्तार से चर्चा करना चाहते हैं।

महात्मा जी ने एकान्त सेवन के लिए अयोध्या, हरिद्वार, ऋषिकेश, उतरकाशी स्थानों पर जाकर जलवायु आदि की दृष्टि से उत्तम स्थान की खोज की परन्तु उन्हें यह उपयुक्त प्रतीत नहीं हुए। फरवरी, 1920 में आप नैनीताल आये और आर्य समाज मन्दिर हल्द्वानी में निवास किया। डा. रामप्रसाद जी मुख्तार और ठाकुर उदयसिंह जी नायक के साथ आपने भीमताल, विनायक, श्याम खेत, रामगढ़ और अल्मोड़ा आदि अनेक स्थान देखे। अन्त में सबसे अधिक अनुकूल एक स्थान रामगढ़ की पहाड़ियों में प्रतीत हुआ जो वहां नदी के पुल से पूर्व की ओर एक बड़े नाले के संगम के निकट था। वहीं पर आपने कुटि बनाने का निश्चय किया। 1 अप्रैल, 1920 को इस स्थान की रजिस्ट्री आपकी प्रेरणा से संयुक्त प्रान्त वर्तमान का उत्तर प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम कर दी गई। 20 मई, 1920 को आश्रम निर्माण का कार्य भी आरम्भ हो गया। आपने यहां श्री कृष्ण सिंह जी की वाटिका में निवास किया। यहां रहते हुए आपने विद्यार्थियों को संस्कृत, अंग्रेजी सहित धार्मिक विषयों का अध्ययन कराया जिसने एक पाठशाला का रूप ले लिया था।

उन दिनों रामगढ़ में नायक जाति में कुछ रूढ़िवादी कुरीतियां प्रचलित थी। इन्हें दूर करने का प्रयास श्री रामप्रसाद मुखतार, नैनीताल और ठाकुर उदयसिंह, रामगढ़ कर रहे थे। महात्मा नारायण स्वामी जी के यहां आ जाने से कार्य ने गति पकड़ ली और एक-दो दिन के अन्तराल पर प्रभावित स्थानों पर जन-जागरणार्थ सभायें होने लगीं। इस आन्दोलन कां ऐसा प्रभाव हुआ कि कुछ दिनों में ही कुरीतियां समाप्त हो गईं। पहले यहां इस जाति की कन्यायों का विवाह नहीं होता था परन्तु अब इन्होंने निश्चय कर लिया कि वह अपनी पुत्रियों का विवाह करेंगे। इस आन्दोलन की प्रथम सफलता तब हुई जब यहां के एक प्रतिष्ठित नायक जाति के श्री नरसिंह दास ने अपनी कन्याओं का विवाह किया। इससे आन्दोलन तीव्र हो उठा। इसके बाद एक के बाद एक विवाह होने लगे और पांच वर्ष में नायक जाति के सभी लोगों ने पूरी तरह से पूर्व अनुचित परम्परा का त्याग कर कन्याओं के विवाह कराने की ईश्वर प्रोक्त वैदिक परम्परा को अपना लिया। अन्य जाति के लोग इनसे विवाह नहीं करते थे अत: इन्होंने अपनी ही जाति में लड़के-लड़कियों के विवाह किये-कराये।

दिसम्बर, 1920 में नारायण आश्रम में कुटी तैयार हो गई थी। एक कमरा 14X12 फीट का था और उस के सामने एक बरामदा 14X 6 फीट का। यह कुटी दुमंजिली थी। 8 दिसम्बर, 1920 को महात्मा जी ने इस आश्रम व कुटी में प्रवेश किया था। इससे पूर्व 7 माह तक आप ठाकुर कृष्णसिंह की वाटिका में रहे थे। महात्मा जी यहां कुटि में रात्रि 8 बजे सोकर प्रात: 2 बजे उठ जाया करते थे। 5 बजे तक 3 घंटे आप उपासना व योगाभ्यास करते थे। 3 मास के अभ्यास से यह स्थिति आ गई कि आप 7 मिनट तक प्राणों को रोक लेते थे। इस सफलता ने आपमें प्रसन्नता उत्पन्न की। यहां रहते हुए एक बार आपका बराण्डे में एक रीछ से आमना-सामना हुआ और एक बार रात्रि को बघेरा आया और उसने आपके कमरे के दरवाजे पर जोर का थपेड़ा मारा। आप जाग गये। लालटेन जलाकर बाहर आये, वहां कोई नहीं था, बघेरा जा चुका था। प्रात:काल मालूम हुआ कि एक निकटवर्ती व्यक्ति के एक बछड़े को मार कर वह बघेरा उठा ले गया था। इस घटना का उल्लेख इस लिये किया गया है कि जिससे यह ज्ञात हो सके कि हमारे महात्मा व विद्वान किन परिस्थितियों में साधना करते थे जबकि उनके पास दिल्ली, मुरादाबाद व देश के अन्य भागों में निवास के साधनों का संकट नहीं था। यहां रहते हुए आपने ऋषिकेश के एक साधू द्वारा बताई गई योग की दो क्रियाओं को लगातार 6 माह तक कर उसे सिद्ध किया और उसके बाद नई क्रिया का अभ्यास करने लगे जो एक वर्ष तक की जानी थी। रामगढ़ में एक बार 12 जून सन् 1935 को सेठ जमुनालाल बजाज अपने परिवार सहित आपके उपदेश श्रवणार्थ पधारे थे। उन दिनों आश्रम में योगदर्शन के आधार पर महात्मा जी के प्रवचन हो रहे थे। आपने परिवार सहित महात्मा जी का प्रवचन सुना और बाद में रामगढ़ के निकटवर्ती स्थान भुवाली लौट गये। हैदराबाद सत्याग्रह जिसके आप सर्वाधिकारी बनाये गये थे, 3 अगस्त, 1939 को सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। आप हैदराबाद से चलकर 15 सितम्बर, 1939 को रामगढ़ आश्रम में आ गये। लोगों ने इस गौरवपूर्ण सफलता के लिए आपका सार्वजनिक अभिनन्दन किया। इस सफलता की स्मृति में वहां एक हाई स्कूल खोलने का प्रस्ताव हुआ जिसे क्रियान्वित किया गया। वर्तमान में यह विद्यालय रामगढ़ के निवासियों के लिए एक शिक्षा मन्दिर के रूप में वरदान बना हुआ है। सन् 1929 में आपके मार्गदर्शन में स्थानीय व्यक्तियों के सहयोग से रामगढ़ में आर्यसमाज स्थापित हुआ। यहां निवास के दिनों में महात्माजी द्वारा एक विधवा का एक विधुर के साथ विवाह सस्कार भी सम्पन्न कराया था। यह उन दिनों एक क्रान्तिकारी घटना थी जिससे वह दम्पती अति प्रसन्न थे। अक्तूबर, 1929 में अल्मोड़ा में आर्य समाज मन्दिर का महात्मा जी ने उद्घाटन किया। इस मन्दिर का निर्माण रूड़की निवासी श्री मथुरादास ठेकेदार, रईस ने व्यक्तिगत रूप से सात हजार रूपये व्यय करके करवाया था। **देहरादून स्थित कन्या गुरूकुल की आधार शिला भी महात्मा नारायण स्वामी के कर कमलों द्वारा सन् 1927 में रखी गई थी।** यह गुरूकुल अद्यावधि चल रहा है।

गढ़वाल में शिल्पकार बन्धुओं पर वहां के बहुसंख्यक सवर्ण जाति के बन्धुओं ने अनेक अत्याचार किये। यहां तक की उनके विवाहों में वर-वधू को सवर्णों के मन्दिर व धर्म स्थानों के सामने डोला-पालकी से उतरना पड़ता था। आर्य समाज के प्रयासों से यह सभी बन्धु आर्य बन गये थे और महात्मा जी सहित आर्यसमाज के नेताओं के प्रयासों से सरकार ने शिल्पकार शब्द के स्थान पर इनके लिए जाति सूचक आर्य शब्द का सरकारी दस्तावेजों में संशोधन कर दिया। परस्पर विवाद में शिल्पकार बन्धुओं का पक्ष था कि जब हम मूर्तिपूजा को ही नहीं मानते तो फिर हमारे वर-वधु डोला-पालकी से क्यों उतरें और सवर्णों के पौराणिक मन्दिरों के आगे क्यों झुके। उनका कहना था कि यदि अन्य सवर्ण बन्धु भी हमारे आर्यसमाज मन्दिरों के सामने झुकें तो वह भी उनकी बात मानने को तैयार थे। यह आन्दोलन व संघर्ष ही डोला-पालकी नाम से प्रसिद्ध हुआ। महात्मा नारायण स्वामी ने न केवल इस आन्दोलन में आर्य बन्धुओं को समर्थन दिया अपितु संयुक्त प्रान्त की सरकार के द्वारा इसे बन्द भी करवाया। इसी प्रकार उन्होंने कुमायूं में नायक जाति की बालिकाओं की सुरक्षा के लिए कानून बनवाने के साथ इस अमानवीय प्रथा को उत्तराखण्ड से समाप्त कराया।

आर्य जगत की सुप्रसिद्ध संस्था आर्य वानप्रस्थ आश्रम की स्थापना के लिए 1926 में महात्मा नारायण स्वामी जी ने हरिद्वार आकर पं. गंगाप्रसाद जी चीफ जज टिहरी के साथ हरिद्वार, कनखल, मायापुर, ज्वालापुर आदि स्थानों में भूमि की तलाश की। ज्वालापुर जहां यह आश्रम स्थित है, की भूमि आपको पसन्द आई। भूमि को खरीद लिया गया जिसकी रजिस्ट्री आर्य प्रतिनिधि सभा, संयुक्त प्रान्त, वर्तमान में उत्तर प्रदेश के नाम कराई गई है। इसके साथ आश्रम खुल गया। आरम्भ में महात्मा नारायण स्वामी जी सहित अन्य तीन व्यक्तियों ने अपने लिये कुटियायें बनवाई। वानप्रस्थियों की दिनचर्या क्या हो, इसका भी अच्छा प्रबन्ध महात्मा जी ने कर दिया जिससे वहां निवास करने वाले वानप्रस्थी ईश्वर चिन्तन एवं सेवा कार्य भली प्रकार से कर सकें।

पेट के रोगों में गुणकारी- नींबू

अम्लता (एसिडिटी)- खाना खाने के बाद एक कप पानी में आधा नींबू, जरा-सा खाने का सोडा मिलाकर प्रतिदिन दो बार पियें।

-दोपहर के भोजन से आधा घण्टा पहले नींबू की मीठी शिकंजी दो महीने तक पियें। खाने के बार न पियें।

खट्टी डकारें- यदि खट्टी डकारें आती हों, तो गरम पानी में नींबू निचोड़कर पियें।

पेटदर्द- पचास ग्राम पोदीना की चटनी पतले कपड़े में निचोड़कर रस निकाल कर उसमें आधा नींबू निचोड़ें दो चम्मच शहद और चार चम्मच पानी मिलाकर पीने से पेट का तेज दर्द शीघ्र बन्द हो जाता है।

-एक नींबू, काला नमक, काली मिर्च, चौथाई चम्मच सोंट, आधा गिलास पानी में मिलाकर पीने से पेटदर्द ठीक हो जाता है।

-अजवाइन, सेंधा नमक को नींबू के रस में भिगोकर सुखा लें। पेटदर्द में एक चम्मच चबाकर, पानी पियें। इस प्रकार हर एक घण्टे में, जब तक दर्द रहे, लें। पेट पर सेंक करें।

-कीड़ों के कारण पेट में दर्द हो, पेट में कीड़े हों, तो सात दिन दो बार नित्य नींबू की एक फांक में पिसा हुआ जीरा, काली मिर्च, काला नमक भरकर चूसें।

-मूली पर नमक, नींबू, काली मिर्च डालकर खाने से अपच का पेट का दर्द ठीक हो जाता है।

-आधा कप मूल के रस में आधा नींबू निचोड़कर नित्य दो बार पीने से खाना खाने के बाद होने वाला पेटदर्द ठीक हो जाता है।

कब्ज- गरम पानी और नींबू प्रात: भूखे पेट खाएं। एक गिलास हल्के गरम पानी में एक नींबू निचोड़कर एनिमा लगाएं। पेट साफ पेट साफ हो जाएगा। कीड़े भी निकल जाएंगे।

-एक गिलास गर्म पानी में एक नींबू, दो चम्मच अरण्डी का तेल (कैस्टर ऑयल) मिलाकर रात को पियें।

-एक चम्मच मोटी सौंफ तथा पांच काली मिर्च चबायें, फिर एक गिलास गरम पानी, एक नींबू और काला नमक मिलाकर नित्य पियें।

उल्टी- आधा कप पानी में पन्द्रह बूंद नींबू का रस, भुना एवं पिसा हुआ जीरा, पिसी हुई एक छोटी इलायची मिलाकर आधे घन्टे में पियें। उल्टी बन्द हो जाएगी।

-नींबू के छिलके सुखाकर, जलाकर राख बना लें, चौथाई चम्मच राख, आधा चम्मच शहद में मिलाकर चाटने से उल्टी बन्द हो जाती है।

-दो छोटी इलायची पीसकर नींबू की फांक में भरकर चूसने से उल्टी बन्द हो जाती है।

-सेंधा नमक और हरे धनिए पर आधा नींबू निचोड़कर चटनी बना लें। जब तक उल्टी हो, बार-बार आधा चम्मच चाटते रहें। यात्रा में उल्टी हो, तो नींबू चाटते रहें।

-शिशु दूध पीने के बाद उल्टी करते हों, तो दूध पिलाने के कुछ देर बाद तीन बूंद नींबू का रस एक चम्मच पानी में मिलाकर पिलाएं।

दस्त- एक कप ठण्डे पानी में चौथाई नींबू निचोड़कर स्वाद के अनुसार नमक, चीनी मिलाकर दो-दो घण्टे में पीने से दस्त बंद हो जाते हैं।

हैजा- नींबू हैजे से भी बचाता है। जब हैजा फैल रहा हो, किसी को हैजा हो गया हो, तो सम्पर्क में आने वाले लोग नींबू का अधिकाधिक सेवन करें। नींबू चूसें, नींबू का अचार खाएं। भोजन के बाद नींबू का पानी पिएं। हैजा के कीटाणु खट्टी चीजों के सेवन से नष्ट हो जाते हैं। हैजा होने पर चार चम्मच गुलाब जल, थोड़ा सा नींबू और मिश्री मिलाकर हर दो घंटे में पिलाने से लाभ होगा।

-सेवा भारती, अमरोहा के सौजन्य से

योग के माध्यम से भारत विश्वगुरू बनने की राह पर

राकेश चड्ढा
कोटा (राजस्थान)

योग मानव जीवन के लिए अनिवार्य है। महार्षि पतंजलि ने अष्टांग योग के द्वारा संसार को एक निश्चित जीवन प्रणाली प्रदान की है। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि को हम जीवन में अपना कर श्रेष्ठ मानव बन सकते है। यह उद्‌गार मुख्यातिथि कोटा दक्षिण के विधायक श्री संदीप शर्मा ने आर्य समाज विज्ञान नगर के परिसर में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योग साधकों के बीच व्यक्त किए। इस अवसर पर अमरोहा से पधारी आर्य विदुषी बीना रस्तोगी ने कहा कि योग से जीवन में सकारात्मकता आती है। हमारे भीतर आशा का संचार होता है तथा नियमित योग करने से हम छोटी–छोटी शारीरिक व मानसिक बीमारियों से मुक्त हो जाते है।

आर्यसमाज के जिला प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि योग के माध्यम से भारत ने विश्व गुरु बनने की ओर कदम बढ़ा दिए है। भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने सुझाव पर यू. एन. ओ के माध्यम से विश्व के 177 देश आज योग दिवस मना रहें है। यह हर भारतवासी के लिए गर्व की बात है।

विज्ञान नगर के पार्षद श्री पवन अग्रवाल व श्रमती रेखा लखारा ने सभी योग साधकों का आभार व्यक्त करतें हुए आर्य समाज के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

मान्य0 सांसद ओम बिरला सांसद के निदेशक में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम आज प्रातः 6 बजे से ही आर्य समाज विज्ञान नगर के परिसर में योग साधक पहुंचने लग गए थे। आर्य समाज के प्रधान जे0 एस0 दुबे, मंत्री राकेश चड्डा व श्रीमती बजबाला ने यौगिक कियाएं करवाई तथा योग की महत्ता का विस्तार से वर्णन किया तथा योग करने से होने वाले लाभों की जानकारी दी।

आज लगभग 400 से भी अधिक स्त्री–पुरुषों ने बड़े उत्साह के साथ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आयोजित योग शिविर में भाग लिया।

कार्यक्रम की व्यवस्था में श्री कुंजबिहारी खण्डेवाल, श्री सुरेश जी लखेरा, श्री मनोहर लाल गुप्ता, श्री राजूल रस्तोगी, श्री सोमेश कुमार गांधी, श्री चंद्र प्रकाश भारद्वाज आदि देख रहे थे। शांतिपाठ के बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ व श्री पवन अग्रवाल की ओर से सभी साधको को जूस वितरित किया गया।

ऋग्वेद

।। ओ३म् ।।

यजुर्वेद

'सत्यार्थ प्रकाश'

के प्रकाशन हेतु आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा की अनूठी एवं क्रांतिकारी योजना

पहली बार सत्यार्थ प्रकाश की लगातार 1,00,000 प्रतियाँ छापने का दृढ़ संकल्प

विशेष : प्रकाशन निधि में न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के रंगीन चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' व आर्यावर्त केसरी प्रकाशित किये जाएंगे। घोषित धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं हैं। ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी घोषित धनराशि भेजी जा सकती हैं। धन्यवाद

।। योजना में सम्मिलित होने की शर्तें ।।

- सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के इस महायज्ञ में आप भी अपनी आस्थाओं की पावन आहुतियाँ भेंट कर सकते हैं।
- न्यूनतम रु0 3100/- की राशि भेंट करने वाले आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष के रंगीन चित्र सत्यार्थ प्रकाश के अंत में 1000 प्रतियों में प्रकाशित होंगे तथा उन आर्यसमाजों को सत्यार्थ प्रकाश की 31 प्रतियां इस सात्विक राशि के उपलक्ष्य में भेंट की जाएंगी।
- सभी महानुभाओं को उनके द्वारा भेंट की गयी धनराशि के बराबर मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश निशुल्क भेंट किए जाएंगे, अर्थात् यदि आपने रुपये 1,00,000/- (एक लाख रु0) भेंट किये हैं, तो आपको सत्यार्थ प्रकाश की 1000 प्रतियां, अथवा रु. 51,000/- (इक्यावन हजार रुपये) भेंट किये हैं, तो 510 प्रतियाँ नि:शुल्क भेंट की जाएंगी अथवा रु. 5100/-, 3100/-, 2100/-, 1100/- की राशि भेंट करने पर सत्यार्थ प्रकाश की क्रमश: 51, 31, 21, 11 प्रतियां भेंट की जाएंगी। इस प्रकार आप जितनी धनराशि प्रदान करेंगे, उतने ही मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश आपको भेंट किए जाएंगे।

: प्रकाशन की विशेषताएं :

1. पुस्तक का आकार 20 X 30 का 8 वां भाग
2. कागज की क्वालिटी 80 GSM कम्पनी पैक
3. सजिल्द, उत्तम व आकर्षक कलेवर
4. फोन्ट साइज 16 प्वाइंट
5. 'सत्यार्थप्रकाश के अंत में इस ग्रन्थ व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से जुड़ी ऐतिहासिक विरासतों के रंगीन चित्र भी प्रकाशित होंगे।
6. 'सत्यार्थप्रकाश' की पृष्ठ संख्या लगभग पांच सौ होगी तथा इस ग्रन्थ के प्रकाशन का लागत मूल्य लगभग रु0 100/- प्रति ग्रन्थ होगा।

पता- डॉ. अशोक कुमार आर्य 'सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि', आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221
Ph. : 05922-262033, 09412139333, E-mail : aryawartkesari@gmail.com

सामवेद

अथर्ववेद

कैसा अन्नपान करें

सुमन कुमार वैदिक

दर्शनों में योग का अति महत्व बताया गया है, जो वेदों, उपनिषदों, ब्राह्मणग्रन्थों में अति पुरातनकाल से व्यवहृत होता आया है। आज स्वाध्याय न होने से योग का अर्थ आसन, व्यायाम ही समझने लगे हैं। योग, जिसका अर्थ महर्षि पतंजलि ने चित्तवृत्ति का विरोध कहा है, जिसमें साधक अपने चित्त की वृत्तियों को समेट कर, इन्द्रियों के विषयों का त्याग कर अपने प्राणों का मिलान कर, मन, आत्मा और ब्रह्म की आभा को जान मोक्ष मार्ग के पथिक बनते हैं।

योगी साधक का शुद्ध पवित्र आहार व्यवहार, अनुशासित जीवन सदैव चिन्तन-मनन में यम-नियमों को पालन के साथ संसार में आवागमन से मुक्त होने की उत्कट इच्छा भी जब होती है, तभी आध्यात्म की सीढ़ी चढ़ी जाती है।

काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष में एक भी दोष रहने पर साधक आध्यात्म की सीढ़ी से नीचे जाने लगता है। उच्च कोटि के साधक की भी कई बार ऐसी दशा हो जाती है, और वह ऐसे स्थान पर भी पहुंच सकता है, जहां प्रकाश नहीं, अंध कार ही होता है।

मान-अपमान की धाराएं मानव को योगभ्रष्ट बना, प्रकृतिवादी, अहंकारी और विलासपूर्ण जीवन का अभ्यस्थ बना देती है, जिससे ईर्ष्या, द्वेष, तृष्णा की प्रबलता हो जाती है। काम, क्रोध, अहंकार, लोभ, मोह बलवती होने से साधक के पुण्य को पाप निगलने लगते हैं। यहां साधक की गति ऊर्ध्वा न रहकर ध्रुवा हो जाती है।

प्राणों का विभाजन कर, इन्द्रियों को निर्यत्रित मन करता है, जो अन्न से बनता है। दूषित अन्न से बना मन इन्द्रियों को राग-द्वेष में ले जाता है, जिससे वह पापकर्म करने लगती है।

हमारे द्वारा पान किया हुआ अन्न शरीर में जा, स्थूल, तरल और गैस रूप में विघटित हो, शरीर में मज्जा, रक्त और चित्त मण्डल का क्रमशः निर्माण करने में सहायक बनता है। चित्त के मण्डल में ही मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार आते हैं, जिनका निर्माण गैस रूप में बने अन्न से होता है। पवित्र दोषरहित अन्न से बना मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार भी सुन्दर होते हैं, जो मानव को ब्रह्मवेत्ता बना, परमात्मा के राष्ट्र में ले जा सकते हैं। जहां किसी प्रकार का अन्धकार उसके जीवन में नहीं रहता।

मानव को विचार अग्नि उर्जा बनानी चाहिए। जैसे बाह्य जगत में विद्युत कार्य करती है, वैसे ही आन्तरिक जगत में मन कार्य करता है। मन सर्वत्र अंगों का स्वामी होता है। मन में मान है, चंचलता है, व्यापकता है। हम अपने परिवार का परिचय भी मन के द्वारा देते हैं।

अन्न का हमारे जीवन में बहुल प्रभाव रहता है। अन्न के अनुरूप मन बनता है। अन्न को प्राणों का आहार भी कहा गया है। एक समय महर्षि चरक ने अपने शिष्यों से पूछा- ''कोऽरुक, कोऽरुक, कोऽरुक? अर्थात् कौन रोगी नहीं है? शिष्य वाग्भट्ट ने उत्तर दिया- हितभुक, मितभुक, ऋतु भुक। हितकारी ऋतु के अनुकूल उचित मात्रा में भोजन लेने वाला स्वस्थ है। अपनी प्रकृति के अनुकूल भोजन करना चाहिए।

आज शाकाहारी भोजन को ही सात्विक भोजन मान लिया गया है। आज भोजन की स्वच्छता और पवित्रता पर नहीं, बल्कि कितने सुन्दर स्थान पर भोजन किया जा रहा है, इस पर महत्व दिया जाता है। हमारे यहां ऋषि राजाओं के भोजन को राजसिक भोजन कहकर ठुकरा देते थे। महाराजा अश्वपति के भोजन को ऋषियों द्वारा ग्रहण न करने पर उन्होंने कहा कि वह स्वयं अन्न उत्पन्न करते हैं तथा उनकी पत्नी स्वयं भोजन बनाती है।

आज तो विटामिन युक्त भोजन को महत्व दिया जाता है, उसके साथ संलग्न विचारों को नहीं।

हमारे ऋषियों ने अन्न और उसके प्रभाव पर बहुत अनुसंधान किये। उन्होंने सात प्रकार के अन्न की व्याख्या की। सबसे पहला अन्न साझा अन्न, जिसको किसान उत्पन्न करता है, वह मानव के लिए। जिसका द्वितीय नीचे वाला भाग पशुओं के लिए। जिस अन्न को पान कर पशुता आती है, वह मानव को नहीं करना चाहिए। इसलिए ऋषियों ने ऊंचे वृक्षों से उत्पन्न पदार्थों के सेवन को कहा, जिसमें आकश तत्व अधिक होता है। कन्द, जिनमें पार्थिव तत्व होता है, उसे वर्जित बताया।

अन्न को प्रसूत इसलिए कहा जाता है कि उसको निगला जाता है। तीसना अन्न व्रहत कहलाता है, जिसकी आहुति दी जाती है, जो सूक्ष्म बन देवताओं को प्राप्त हो जाता है। इसके लिए शाकल्य की सुन्दरता के साथ यज्ञमान के विचार भी सुन्दर होने चाहिए। विचारों में अशुद्धता होने से घृणावाद आ जाता है, जिससे अतिवृष्टि और अकाल पड़ते हैं।

चौथा अन्न प्रहुत कहलाता है, जिसे पुरोहित को दिया जाता है। जो लोक-कल्याण की चर्चा करता है, बुद्धिमत्ता का प्रसार करता है। ऐसा बुद्धिमान पुरोहित कहा जाता है।

इसके पश्चात् तीन अन्न आत्मा के हैं, जिनमें एक चक्षु अन्न का अर्थ किसी वस्तु को ग्रहण करना। नैत्र सुदृष्टिपात करें। छठा अन्न श्रोत्र होता है, जो दिशाओं से शब्दों को लाता है। सातवां अन्न घ्राण (नासिका) सुगन्ध को ग्रहण करना घ्राण का अन्न है।

इस सात प्रकार के शुद्ध पवित्र अहार से ही मानव में जीवन की प्रतिभा का जन्म होता है। **(लेख का आधार ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी के प्रवचन हैं)**

मॉरीशस में श्रावणी यज्ञ

पं० बिष्णुदेव बिसेसर

किसी लेखक ने क्या खूब लिखा है कि परमात्मा ने सर्वप्रथम मॉरीशस बनाया था। फिर उसके बाद नकल कर के स्वर्ग बनाया होगा। क्योंकि विश्व में शायद कोई ऐसा देश होगा, जहां पर हम हिन्दू-मुसलमान, गौरे ईसाई आदि मिलजुल कर रहते, कमाते और जीते हैं।

इसका सही कारण यह है कि आर्यसमाज की इसमें लगभग सात सौ शाखाएं हैं, जिनमें आर्य समाज, आर्य सभा और राजपूत सभा सम्मिलित हैं। जहां पर प्रति सप्ताह सभी मन्दिरों में यज्ञ-भजन होता है। गिरजाघर, मस्जिद आदि में भी लोग भरे रहते हैं। इस देश के सभी लोग परमात्मा पर पूरी आस्था रखते हैं। हर एक पर्व बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। यदि मेरे घर पर कोई विशेष यज्ञ होता है, तो मुसलमान, ईसाई आदि को दावत दी जाती है। कढ़ा प्रसाद भी वे ग्रहण करके जाते हैं। यही है हमारे वैदिक धर्म का बड़प्पन। ईश्वर एक है और सभी के लिए है। हम आर्यसमाजी वैदिक परिवारों के लिए एवं सभी हिन्दुओं के लिए पवित्र पावन श्रावणी मास का शुभारम्भ हो रहा है। 31 जुलाई को गुरु पूर्णिमा है, और पहली अगस्त से रक्षा बन्ध न के एक सप्ताह बाद तक यह यज्ञ, भजन, सत्संग आदि चलता रहेगा।

जब मैं 1994 में उत्तर प्रान्त का प्रधान बना और 1997 में आर्य सभा, मॉरीशस का उपमंत्री बना, तब आर्य सभा मॉरीशस के सहयोग से यह श्रावणी यज्ञ की परिचर्चा चलाई। प्रधान श्री रामखेलावन ने पूरे देश में यह परिपत्र छपवाकर वितरण किया, और यह पर्व तूफान की तरह फैल गया। सोने पे सुहागा हो गया। आर्य समाज के वीरों ने गहरी सांस ली कि हमारा एक मास का पवित्र मास आ गया, जहां पर हम परमात्मा के ध्यान में मगन होंगे। पुरोहितों का भी एक मास का कार्यक्रम बन गया। देश यज्ञमय हो जाता है, यज्ञ का वातावरण छा जाता है। मॉरीशस के सभी मन्दिरों पर और हर घर की छतों पर ओ3म् का झण्डा फहराया जाता है। व्रत रखा जाता है और घर-घर यज्ञ, हवन, भजन, सत्संग, प्रवचन चालू हो जाता है। कई वर्षों से आर्य सभा मॉरीशस की आरे से भारत से कई बड़े-बड़े विद्वानों को निमंत्रण दिया जाता है। जिस तरह जून मास को सत्यार्थ प्रकाश घोषित किया जाता है, उसी प्रकार जुलाई, अगस्त मास को श्रावणी मास घोषित किया गया है। मॉरीशस रेडियो पर एक मास तक वेदों पर प्रवचन, वेदपाठ का कार्यक्रम चलता है।

देखा-देखी पुण्य का कार्य हो रहा है। आज यह श्रावणी यज्ञ, शिवालय, काली मन्दिर में भी किया जाता है। मैं स्वयं प्रतिवर्ष मन्दिर के प्रधान, मंत्री सदस्यों के घर यह श्रावण यज्ञ करता आ रहा हूं।

आज मॉरीशस के कुछ पौराणिक भाई-बहन भी समझ गये हैं कि ईश्वर एक है। यज्ञ ही सबसे बड़ा पुण्य है। गायत्री मंत्र ही सबसे बड़ा मंत्र है। इसी मास में ज्यादातर लोग शादी ब्याह, गृहप्रेवेश, खरीदारी आदि करते हैं। इस मास में जनेऊ भी बदलते हैं और रामायण पाठ भी आरम्भ हो जाता है।

श्रावणी पर्व से एक मास पहले सफाई आदि करते हैं, निमंत्रण देते हैं, ओ3म् का ध्वज फहराते हैं, यज्ञ करते हैं, गायत्री मंत्र से आहुति देते हैं और सभी का भोजन से सत्कार करते हैं। यज्ञ के बाद श्रावणी भजन करते हैं। प्रवचक का कार्यक्रम चलता है। घर-घर में परिवारों के साथ संध्या अग्निहोत्र करते हैं, और वेदपाठ भी करते हैं।

हमें पूर्ण आशा है कि हमें विश्व को यज्ञमय और आर्य बनाना है। श्रावण मास में अपने घर-घर यज्ञ अवश्य करें। परिवार और मित्रों को निमंत्रण दें। और घर, परिवार, देश में सुख-समृद्धि ध न-दौलत, मनोकामनाओं की सिद्धि होगी, और देव दयानन्द का सपना पूरा होगा। वेद की ज्योति जलती रहे, आर्य समाज अमर रहे।

-स्वामी दयानन्द मार्ग, मॉरीशस

वेदों में आधुनिक विज्ञान

(उष्मा की तीन गतियां)

वेद ज्ञान की पुस्तक है। वेद मंत्रों की अवैज्ञानिक व्याख्या के कारण वेद जनसामान्य से दूर हो गये।

उष्मा-चालन तीन प्रकार का होता है- 1. चालन 2. संवहन 3. विकिरण

लोह आदि ठोस पदार्थों में उष्मा चालन(बवदकनबजपवद) द्वारा एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाती है। धातु के परमाणु अपना स्थान नहीं बदलते हैं। द्रव तथा वायु में उष्मा जब गति करती है तो परमाणु अपना स्थान बदलते है। इसे संवहन कहते हैं। सूर्य की किरणों से आने वाली उष्मा(ीमंज) बिना किसी माध्यम के पृथ्वी सतह पर आती है। इसे विकिरण कहते है। यही वैज्ञानिक तथ्य युजर्वेद 5/8में इस प्रकार का वर्णन किया गया है।

1. ''या ते अग्नेय अयः शया तनूर्वर्षिष्ठा गहवरेष्ठा।

उग्रं वचः अपावर्धात् त्वेवं वचः अपावधीत् स्वाहा'' (यजु0 5/8)

अयः कहते हैं लोह आदि धातुओं को। हे अग्ने लोह आदि धातुओं के अन्दर निर्मित जो तुम्हारा शरीर है, वह अपनी विशेषताओं से युक्त होता है तथा वह उग्र व तीव्र ध्वनियों से धातु की रक्षा करता है।

2. ''या ते अग्ने रजःशया तनूर्वर्षिष्ठा गहवरेष्ठा। उग्रं वचः अपावर्धात् त्वेवं वचः अपावधीत् स्वाहा'' (यजु0 5/8)

रज शब्द का प्रयोग जल तथा वायु के लिए होता है। रजः शया का अर्थ है जल तथा वायु में स्थित उष्मा की अपनी विशेष विशेषताएं होती हैं। यह उग्र तथा तीव्र ध्वनियों के प्रभाव को समाप्त करती है।

3. ''या ते अग्ने हरिशया तनूर्वर्षिष्ठा गहवरेष्ठा।

उग्रं वचः अपावधीत् त्वेवं वचः अपावधीत् स्वाहा'' (यजु0 5/8)

हरि कहते है सूर्य की किरणों को। सूर्य किरणों में स्थित उष्मा विकिरण द्वारा पृथ्वी सतह तक आती है। इसकी अपनी विशेषताएं होती है तथा यह उग्र व तीव्र ध्वनियों से रक्षा करता है।

1.अयः शया-ठोस धातु में स्थित उष्मा 2. रजः शया-द्रव तथा वायु में स्थित उष्मा 3. हरिशया-सूर्य किरणों में स्थित उष्मा

तीनों प्रकार कर उष्माओं की अपनी अलग विशेषताएं है। इनमें एक बात सामान्य है कि ये व उग्र ध्वनि प्रभाओं से अपने घरों की रक्षा करती हैं।

प्रेषक :- कृपाल सिंह वर्मा, 253 शिवलोक, कंकरखेड़ा, मेरठ, मोबाइल नं.- 9927887788

सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में २७ से होगा

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

सिडनी (आस्ट्रेलिया)। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्वावधान में ऑस्ट्रेलिया आर्य महासभा के सानिध्य में अगला अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 27, 28 नवम्बर 2015 को ऑस्ट्रेलिया के सिडनी महानगर में सम्पन्न होगा। इस सम्बन्ध आर्य सुरेश चन्द्र अग्रवाल यात्रा संयोजक (मोबा. : 09824072509) से सम्पर्क किया जा सकता है।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन हेतु 24 नवम्बर को दोपहर 1:15 बजे दिल्ली से हवाई यात्रा प्रारम्भ होगी तथा सिडनी से वापसी एक दिसम्बर को प्रातः 9:45 बजे होगी।

ज्ञातव्य है कि सार्वदेशिक सभा के नेतृत्व में इससे पूर्व 2 नवम्बर को सिंगापुर तथा 8 व 9 नवम्बर को थाईलैण्ड में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन हो चुके हैं।

आर्यावर्त केसरी के आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि 'आर्यावर्त केसरी' के नाम से भारतीय स्टेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 30404724002 अथवा सिंडीकेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 88222200014649 में सीधे जमा करा सकते हैं, जिसकी सूचना अपने पासपोर्ट साइज़ फोटो, नाम, पते व चलभाष सहित अविलम्ब हमें भेज दें। सहयोग राशि एकाउन्टपेयी चैक या धनादेश द्वारा भी भेजी जा सकती है। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.), दूर. -05922-262033, चल.- 09758833783 / 08273236003

आइये! आज ही आर्यावर्त केसरी के मिशन से जुड़िए...

गांवों का बुरा हाल

अतुल कुमार शुक्ला

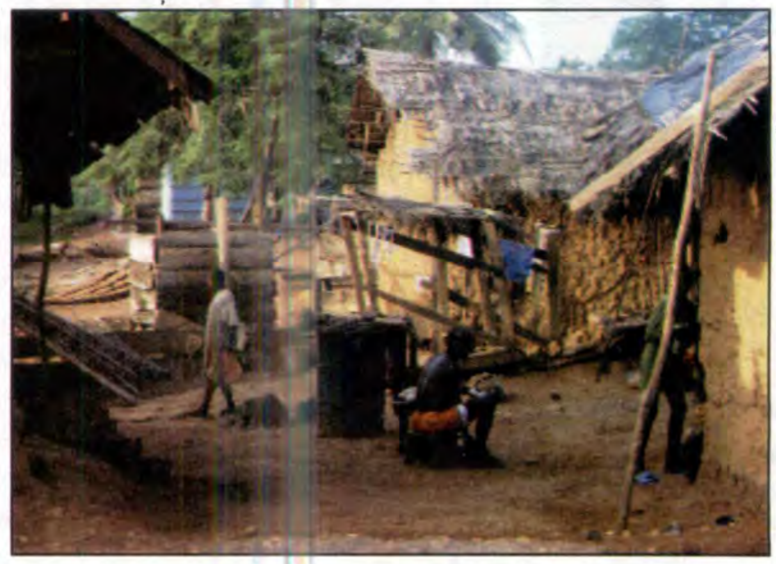

2011 के सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण में जो सबसे प्रमुख तथ्य उभर कर आया है वह यह है कि देश के गांवो की हालत आज भी बद से बदत्तर बनीं हुई है। हम चुनिंदा शहरो में बड़ी ऊँची-ऊँची अट्टालिकाएँ खड़ी करके और शोपिंग मॉल बनाकर विकास की एक अधुरी तस्वीर में तभी सम्पूर्णता के साथ रंग भरे जायेगें, जब हमारे देश का ग्रामीण क्षेत्र आर्थिक रूप से मजबूत बनेंगा। इसका सीधा मतलब यह भी निकलता है कि अभी जो विकास हुआ है तो हमें सोचना चाहिए कि हम विकास की गति को किस तरफ ले जाए जिससे हमारे गांवो में समृद्धि फैले। यहीं पर भूमि अधिग्रहण विधेयक का मामला पूरी तरह संज्ञान मे लिया जाना चाहिए। यह सत्य है कि जब तक गांवो की तरफ हम औद्योगिकरण का मुंह नही मोडेगे। जब तक भारत का समावेशी विकास सम्भव नहीं है। अभी तक किसानो के सबसे बढे नेता स्व0 श्री चौधरी चरण सिंह जिस बात पर सबसे ज्यादा जोर देते थे वह यह था कि हम खेती किसानी और गांवो के मजदुरो को कृषि क्षेत्र पर निर्भर होने के स्थान पर इनकी निर्भरता उद्योगो पर बढाए गए कदम यह तभी संभव है जब हमारे छोटे शहरो, कस्बो और गांवो में उद्योगो का जाल फैले।

ये उद्योग सामान्य रूप से प्राप्त वस्तुओ पर आधारित हो। इनमें कृषि जन्य उत्पादो से लेकर अन्य औद्योगिक उत्पाद शामिल हों। वर्तमान भूमि विधेयक इसी दिशा में ले जाने वाला ठोस कदम है। इसका विरोध करके हम गांवो के विकास को बीच में छोड देना चाहते है। इस तथ्य को कोई भी व्यक्ति काट नहीं सकता है कि 1896 में अंग्रेजो ने जो भूमि अधिग्रहण कानुन बनाया था उसका लक्ष्य भारत का विकास नहीं था बल्कि अंग्रेजो के अपने शासन को मजबूती देना था लेकिन अब आजादी के 67 साल बाद हमें अपने गांवो की स्थिति को देखते हुए फैसले करने होगें कि औद्योगिकरण की रफतार गांवो की तरफ बढे और किसानो के बेटे भी डॉक्टर या इंजिनियर बनें। हम किसानो की नई पीढीयो को केवल किसानी करने के लिए मजबूर नहीं कर सकतें है। हमें केवल यह देखना है कि हमारे पास जितनी भी कृषि योग्य भूमि है उस पर फसलो का उत्पादन लगातार बढता रहे और किसानो को उसकी लागत का लाभप्रद मुल्य प्राप्त हो। यह तस्वीर का एक पहलू है। दुसरा पहलू जो सबसे महत्वपूर्ण है वह यह है कि हम ग्रामीण क्षेत्रो को पुरानें विचारो से दुर रखें।

मुरादाबाद

भरपूर ताकत के लिए सदा प्रयोग करें मुग़ल-ए-आज़म कैप्सूल व क्रीम। हर मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध है या डाक द्वारा मंगाएं।

निल स्पर्म रोगी व बेऔलाद अवश्य मिलें

हाशमी दवाखाना, अमरोहा (उ.प्र.)

मोबा. नं०- 09997161320, 09997161317

आर्यावर्त केसरी

संरक्षक
श्रीराम गुप्ता
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक', विनय प्रकाश आर्य, शिव कुमार आर्य
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र, यतीन्द्र विद्यालंकार, रवित विश्नोई, डॉ. ब्रजेश चौहान
मुद्रण- फरमूद सिद्दीकी, इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033, 9412139333 फैक्स : 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mai :
aryawart_kesari@rediffmail.com
aryawartkesari@gmail.com

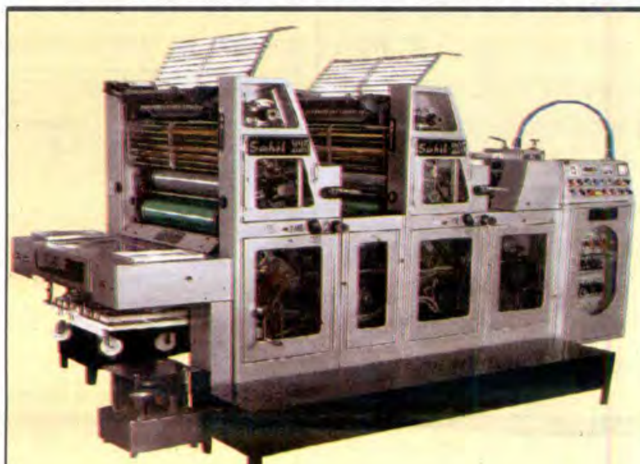

आर्यावर्त प्रिन्टर्स

रूपये 225 में 1000 कलर्ड विज़िटिंग कार्ड

नोट : आप हमें अपने कार्ड का डिज़ाइन ई-मेल भी कर सकते हैं।

हर प्रकार के मल्टी कलर्ड पोस्टर, पैम्फलेट, हैण्डबिल, किताब, ट्रैक्ट, कैलेण्डर, समाचार पत्र व पत्रिका, स्टीकर, बिल बुक, कलर प्रोसपैक्टस, कॉलेज मैग्ज़ीन, स्कूल डायरी, रिपोर्ट बुक, फीस कार्ड, फीस रसीद, रिज़ल्ट कार्ड, कलर्ड लैटर हैड, लिफाफे, कलर्ड कार्ड आदि के लिए सम्पर्क करें-

आर्यावर्त प्रिंटर्स

सौम्या सदन, गोकुल विहार, निकट श्रीराम पब्लिक इ. कालेज, अमरोहा-244221
Ph. : 05922-262033, 08273236003, 9758833783, 09412139333
e-mail : aryawartkesari@gmail.com